सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

विश्वास एक छोटा शब्द है पढ़ने में एक पल लगता है, पर साबित करने में पूरी जिंदगी लग जाती है...।
....अज्ञात

वर्ष-01 अंक-23 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, मंगलवार 10 फरवरी 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य -2 रुपए,

भिलाई की झीलों में विदेशी मेहमान : रेड-क्रेस्टेड पोचार्ड और हमारी जिम्मेदारी

रिसाली नगर निगम के सभापति केशव बंछोर और एमआईसी सदस्य सनीर साहू ने भिलाई के इमरान अहमद अंसारी को सूचना दी थी कि -तिल में खूबसूरत पक्षी है। इमरान ने मौके पर पहुंचकर खूबसूरत प्रवासी बतख की तस्वीर ली, इमरान ने अपने फेसबुक वाल पर इस खूबसूरत तस्वीर को सा-ा किया है।

मौसम बदलते ही भिलाई पहुंचते हैं विदेशी मेहमान

आलोक तिवारी / भिलाई

सर्दियों के मौसम में जब तापमान गिरता है, तब भिलाई की झीलें और तालाब केवल पानी का स्रोत नहीं रह जाते, बल्कि वे हजारों किलोमीटर दूर से आने वाले प्रवासी पक्षियों का सुरक्षित ठिकाना बन जाते हैं। इसी कड़ी में इन दिनों भिलाई में एक बेहद खूबसूरत विदेशी मेहमान की मौजूदगी दर्ज की गई है— रेड-क्रेस्टेड पोचार्ड।

वैज्ञानिक नाम Netta rufina वाली यह आकर्षक प्रवासी बत्तख हर साल सर्दियों में यूरोप, मध्य एशिया और साइबेरिया जैसे ठंडे क्षेत्रों से भारत की ओर प्रवास करती है। लंबी और कठिन यात्रा के बाद यह अक्टूबर से मार्च के बीच हमारे तालाबों और झीलों में देखी जाती है, जहां यह पानी में गोता लगाकर अपना भोजन तलाशती है।

रेड-क्रेस्टेड पोचार्ड की पहचान इसकी चमकीली लाल चोंच और रंगीन सिर से होती है, जो इसे अन्य बत्तखों से अलग बनाती है। जब यह शांत जल में तैरती दिखाई देती है, तो प्रकृति की सुंदरता अपने चरम पर नजर आती है। ऐसे दृश्य न सिर्फ आंखों को सुकून देते हैं, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन का भी संकेत देते हैं। पर्यावरण विशेषज्ञ मानते हैं कि किसी भी क्षेत्र में प्रवासी पक्षियों का आगमन वहां की जैव विविधता और जल निकायों की सेहत का प्रमाण होता है। भिलाई की झीलों में रेड-क्रेस्टेड पोचार्ड की मौजूदगी यह दर्शाती है कि यहां का पर्यावरण अभी भी इन पक्षियों के अनुकूल है। हालांकि, यह संतुलन बेहद नाजुक होता है और थोड़ी सी लापरवाही इसे बिगाड़ सकती है।

आज जरूरत इस बात की है कि हम इन प्रवासी मेहमानों को केवल देखने और तस्वीरें लेने तक सीमित न रखें, बल्कि उनके संरक्षण के प्रति भी जागरूक हों। तालाबों और झीलों में गंदगी फैलाना, तेज शोर करना, नावों से पक्षियों को डराना या अवैध शिकार जैसी गतिविधियां इन पक्षियों के लिए बड़ा खतरा बन सकती हैं।

रेड-क्रेस्टेड पोचार्ड जैसे प्रवासी पक्षी हमें यह संदेश देते हैं कि प्रकृति सीमाओं से परे है। वे महाद्वीपों को जोड़ते हैं और हमें हमारी जिम्मेदारियों का एहसास कराते हैं। यदि हम अपने जल निकायों को स्वच्छ और सुरक्षित रखें, तो हर साल ऐसे ही विदेशी मेहमान हमारी धरती पर लौटते रहेंगे। भिलाई की झीलों में इन दिनों दिख रहा यह सुंदर दृश्य केवल एक पक्षी की मौजूदगी नहीं है, बल्कि यह हमारे पर्यावरण, हमारी जागरूकता और हमारी भविष्य की जिम्मेदारियों का प्रतीक भी है।

खास-खबर

बिना फायर NOC कैसे चल रहे कोचिंग सेंटर? जनदर्शन में उठी 'फिजिक्स वाला' सहित कई संस्थानों पर कार्रवाई की मांग

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग-भिलाई

जिले में कोचिंग संस्थानों की मनमानी और प्रशासनिक लापरवाही पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। जनदर्शन में पूर्व पार्षद डॉ. दिवाकर भारती ने शिकायत दर्ज कराते हुए आरोप लगाया है कि भिलाई के नेहरू नगर सहित अन्य क्षेत्रों में कई कोचिंग सेंटर बिना फायर अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) और बिना फायर सेफ्टी उपकरणों के खुलेआम संचालित किए जा रहे हैं। शिकायत में विशेष रूप से नेहरू नगर भिलाई में प्लस हॉस्पिटल के पास संचालित फिजिक्स वाला पीट फाउंडेशन का उल्लेख किया गया है, जो कथित रूप से पिछले करीब दो वर्षों से नियमों को ताक पर रखकर संचालित हो रहा है।

शिकायतकर्ता के अनुसार, संस्थान में अग्निशमन से जुड़े किसी भी प्रकार के सुरक्षा यंत्र उपलब्ध नहीं हैं, जिससे सैकड़ों विद्यार्थियों की जान खतरे में है। डॉ. भारती ने जनदर्शन में यह भी उल्लेख किया कि देश में पूर्व में कोचिंग सेंटरों में हुई आगजनी की घटनाएं चेतावनी देने के लिए काफी हैं। वर्ष 2024 में दिल्ली के एक कोचिंग सेंटर में आग लगने से तीन छात्रों की मौत और दर्जनों के घायल होने की घटना सामने आई थी। वहीं 24 मई 2019 को गुजरात के सूरत स्थित तक्षशिला कॉम्प्लेक्स में संचालित कोचिंग सेंटर में भीषण आग से 23 छात्रों की जान चली गई थी। इसके अलावा मुखर्जी नगर दिल्ली सहित अन्य राज्यों में भी ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। इसके बावजूद जिले में नियमों का पालन कराए बिना कोचिंग सेंटरों का संचालन प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े करता है। शिकायत में कहा गया है कि यदि समय रहते जांच और कार्रवाई नहीं की गई तो किसी भी दिन बड़ी दुर्घटना से इनकार नहीं किया जा सकता। जनदर्शन में शिकायत के साथ संबंधित संस्थानों के फोटोग्राफ भी संलग्न किए गए हैं। शिकायतकर्ता ने कलेक्टर से मांग की है कि बिना फायर ठडठ संचालित सभी कोचिंग सेंटरों की तत्काल जांच कराई जाए और नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर संचालकों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके। अब बड़ा सवाल यह है कि क्या प्रशासन समय रहते जागेगा, या किसी हादसे के बाद ही कार्रवाई होगी?

निगम की परियोजना शाखा में पेवर ब्लॉक के नाम पर करोड़ों का संगठित भ्रष्टाचार

भाजपा पार्षद दल ने महापौर और नगर निगम आयुक्त की भूमिका को बताया संदेहास्पद

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिका निगम भिलाई की परियोजना शाखा की कार्यशैली लंबे समय से सवालों के घेरे में रही है। अब उपलब्ध तथ्यों, दस्तावेजों एवं शपथ पत्रों के आधार पर यह स्पष्ट होता जा रहा है कि परियोजना शाखा के अंतर्गत कराए गए पेवर ब्लॉक कार्यों में करोड़ों रुपये का सुनियोजित भ्रष्टाचार किया गया है। पिछले 23 महीनों की अवधि में परियोजना शाखा के माध्यम से लगभग 12 करोड़ 66 लाख रुपये के पेवर ब्लॉक कार्य स्वीकृत एवं भुगतान किए गए, जिनमें भारी वित्तीय अनियमितताएं, नियमों की खुली अवहेलना और भ्रष्ट आचरण सामने आए हैं।

सामान्य सभा में शपथ पत्र के साथ सीधा आरोप

भाजपा पार्षद संतोष मौर्य द्वारा 17 अक्टूबर 2025 को आयोजित नगर निगम की सामान्य सभा में विधिवत शपथ पत्र प्रस्तुत कर परियोजना शाखा के कार्यों पर सीधा और स्पष्ट आरोप लगाया गया। श्री मौर्य ने अपने शपथ पत्र में यह स्पष्ट कहा कि— परियोजना शाखा अंतर्गत कराए गए अधिकांश पेवर ब्लॉक कार्य स्वीकृत प्राक्कलनों के अनुरूप नहीं हैं। कार्यों में गुणवत्ता, मात्रा, स्थल एवं भुगतान इ सभी स्तरों पर गंभीर अनियमितता की गई है। इन कार्यों की जांच कलेक्टर की प्रत्यक्ष निगरानी में, नगर निगम से इतर अन्य विभागों के अधिकारियों की संयुक्त समिति से कराई जाए।

33 कार्यों में भारी अनियमितता - वास्तविकता छुपाने का प्रयास

श्री मौर्य का आरोप है कि परियोजना शाखा अंतर्गत कम से कम 33 ऐसे कार्यादेश हैं, जिनमें गंभीर अनियमितताएं हुई हैं और जिनकी जांच की मांग लगातार की जा रही है, किंतु— विभाग द्वारा जानबूझकर जानकारी छुपाई जा रही है। जिन स्थानों के लिए कार्य स्वीकृत हुए थे, उन स्थानों पर कार्य किया ही नहीं गया। राज्य शासन से जिन शर्तों एवं प्राक्कलनों के आधार पर स्वीकृति ली गई, उनके अनुरूप कार्य नहीं करवाए गए। जिन स्थानों पर कार्य हुआ, वहाँ कार्य की मात्रा, गुणवत्ता और भुगतान में भारी अंतर पाया गया। संबंधित फाइलों एवं दस्तावेजों को दबाने और गायब करने का प्रयास किया जा रहा है। यह सब इस बात की ओर इशारा करता है कि घोटाले को उजागर होने से बचाने के लिए सुनियोजित प्रयास किए जा रहे हैं।

अधिनियम का खुला उल्लंघन

परियोजना शाखा की अपारदर्शिता और भ्रष्ट मंशा इस तथ्य से और स्पष्ट हो जाती है कि— नगर निगम के पार्षद महेश शर्मा द्वारा 9 जून 2025 को सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत जानकारी मांगी गई, किंतु आज तक कोई जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई। भाजपा पार्षद संतोष मौर्य द्वारा 7 नवंबर 2025 को पुनः विधिवत आवेदन प्रस्तुत किया गया। विभाग द्वारा 22 जनवरी 2026 को मात्र 13 फाइलों की अधूरी, अस्पष्ट और भ्रमित करने वाली जानकारी उपलब्ध कराई गई। इन 13 फाइलों की अनुमानित लागत लगभग 6 करोड़ 20 लाख रुपये है। इसके विपरीत अभी भी 20 फाइलें जानबूझकर छुपाई जा रही हैं, जिनकी अनुमानित कार्यादेश लागत लगभग 6 करोड़ 40 लाख रुपये है। यह स्थिति यह सिद्ध करती है कि नगर निगम प्रशासन सूचना के अधिकार कानून का भी खुला उल्लंघन कर रहा है, ताकि भ्रष्टाचार सामने न आ सके।

जिम्मेदारों पर उठ रहा सवाल

नगर निगम आयुक्त राजीव कुमार पांडे की भूमिका इस पूरे प्रकरण में अत्यंत संदेहास्पद प्रतीत होती है। परियोजना शाखा को लेकर जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों तथा प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा लगातार शिकायतें की गईं, परंतु आयुक्त द्वारा कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। भाजपा पार्षदों का स्पष्ट आरोप है कि आयुक्त महोदय निष्पक्ष रूप से कार्य नहीं कर रहे हैं। पार्षदों द्वारा की गई शिकायतों को हंसी-मुस्कान में टाल देना आयुक्त की नियमित कार्यशैली बन चुकी है। पेवर ब्लॉक कार्यों में भ्रष्टाचार को लेकर लगभग पांच बार लिखित पत्राचार किया गया, किंतु आज तक एक भी पत्र का उत्तर नहीं दिया गया। गंभीर आरोपों के बावजूद परियोजना शाखा में पदस्थ किसी भी अधिकारी को नोटिस तक जारी नहीं किया गया।

जांच समिति बनाने में भी जानबूझकर देरी

संतोष मौर्य द्वारा यह मांग की गई थी कि— पूरे मामले की जांच कलेक्टर की निगरानी में उच्च स्तरीय समित बनाकर कराई जाए। इसके बावजूद— आयुक्त द्वारा कलेक्टर कार्यालय को एक भी पत्र प्रेषित नहीं किया गया। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि दोषी अधिकारियों को बचाने का प्रयास किया जा रहा है।

पूर्व की जांच रिपोर्ट भी दबाई गई

यह पहला अवसर नहीं है जब नगर निगम में जांच रिपोर्ट को दबाया गया हो। सामान्य सभा में सफाई कार्यों में भ्रष्टाचार के आरोपों पर जांच समिति का गठन किया गया था। समिति द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करने के बावजूद लगभग एक वर्ष बीत जाने के बाद भी रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की गई। यह सब दर्शाता है कि नगर निगम प्रशासन में पारदर्शिता समाप्त हो चुकी है।

पार्षदी दांव पर लगाकर जांच की मांग

भाजपा पार्षद संतोष मौर्य ने यह भी स्पष्ट किया कि— यदि मेरे द्वारा लगाए गए आरोप जांच में असत्य पाए जाते हैं, तो मेरी पार्षदी तत्काल प्रभाव से शून्य कर दी जाए। यह वक्तव्य अपने आप में यह दर्शाता है कि श्री मौर्य अपने आरोपों को लेकर कितने आश्वस्त और प्रतिबद्ध हैं।

शाखा का दुरुपयोग

परियोजना शाखा का गठन बड़े और विशेष योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु किया गया था, किंतु— 1 जनवरी 2022 से आज तक परियोजना शाखा द्वारा कोई भी बड़ी जनहितकारी योजना धरातल पर नहीं उतारी गई। उद्यान, वाहन, निर्माण जैसे कार्य किए जा रहे हैं, जबकि इनके लिए निगम में अलग-अलग विभाग पहले से मौजूद हैं।

50,000 से लेकर 5 करोड़ तक की निविदाएं परियोजना शाखा से जारी की जा रही हैं। पसंदीदा इंजीनियरों की नियुक्ति कर, पसंदीदा ठेकेदारों को लाभ पहुंचाने के लिए निविदा शर्तें बनाई जा रही हैं। पिछले दो वर्षों में—न तो आम जनता को कोई लाभ मिला, न ही भाजपा पार्षदों के वार्डों में कोई उल्लेखनीय विकास कार्य हुआ। यदि किसी को लाभ हुआ है, तो वह ठेकेदार-अधिकारी गठजोड़ है।

भाजपा पार्षद की स्पष्ट मांग

भाजपा पार्षद संतोष मौर्य सहित सभी भाजपा पार्षदों की मांग है कि— परियोजना शाखा अंतर्गत सभी 33 कार्यों की कलेक्टर की निगरानी में उच्च स्तरीय जांच कराई जाए। छुपाई गई सभी फाइलों को तत्काल सार्वजनिक किया जाए। दोषी अधिकारियों और ठेकेदारों पर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए। नगर निगम में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। यदि शीघ्र न्यायसंगत कार्रवाई नहीं की गई, तो भाजपा पार्षद आंदोलन, न्यायालय एवं अन्य संवैधानिक विकल्प अपनाने को विवश होंगे, जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी नगर निगम प्रशासन की होगी।

चर्चा का विषय

जनता मूलभूत सुविधाओं के लिए तरसती रही

नाम बदलने की राजनीति में डूबी नगर सरकार

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

नगर निगम की पहली सामान्य सभा ही सत्ता और विपक्ष के टकराव, शोर-शराबे और आरोप-प्रत्यारोप की भेंट चढ़ गई। शहर की बदहाल सड़कों, गंदे पानी, नालियों की दुर्दशा और सफाई व्यवस्था जैसे जनहित के मूल प्रश्नों पर ठोस चर्चा की बजाय सदन का बड़ा समय नामकरण और औपचारिक प्रस्तावों में खप गया।

सभा के दौरान सबसे बड़ा विवाद लखोली रोड को छोड़कर चिखली रोड को चौड़ा करने के फैसले को लेकर खड़ा हुआ। भाजपा पार्षदों के इस निर्णय को गलत, जनविरोधी और पक्षपातपूर्ण बताते हुए तीखा विरोध दर्ज कराया। सदन में स्थिति इतनी बिगड़ी कि कांग्रेस-भाजपा पार्षद आमने-सामने आ गए और बैठक कई बार बाधित हुई।

विपक्ष का आरोप है कि शहरवासियों को आज भी बिना फिल्टर का गंदा पानी पिलाया जा रहा है। करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद फिल्टर प्लांट अपेक्षित क्षमता से नहीं चल पा रहे। कागजों में सुधार है, नलों में आज भी गंदा पानी आ रहा है — यह आरोप सदन में बार-बार गूंजता रहा। अवैध कॉलोनियों और भवन अनुज्ञा: नियम सिर्फ कमजोरों के लिए? सभा में यह मुद्दा भी उठा कि कई इलाकों में अवैध कॉलोनियों को मौन स्वीकृति दी जा रही है, जबकि सामान्य नागरिकों को भवन अनुज्ञा के लिए महीनों चक्कर काटने पड़ते हैं। सवाल यह भी उठा कि—जिन कॉलोनियों में सड़क-नाली नहीं है, जहां ड्रेनेज की कोई व्यवस्था नहीं, वहां आखिर किस आधार पर निर्माण की अनुमति दी जा रही है? 13 प्रस्ताव पारित, 11 सर्वसम्मति से—लेकिन जमीनी हकीकत? नगर निगम ने दावा किया कि 13 प्रस्ताव पारित हुए 11 सर्वसम्मति से और 2 बहुमत से लेकिन विपक्ष ने इसे कागजी विकास करार दिया। नामकरण, मानदेय, समितियों के गठन जैसे विषयों पर तेजी दिखाई गई, सड़क मरम्मत, नालियों की सफाई, पीने के पानी की गुणवत्ता, सफाई कर्मचारियों की स्थिति, जैसे मुद्दों पर कोई स्पष्ट समयसीमा और जवाबदेही तय नहीं की गई। हंगामेदार सदन, सवालों से बचती नगर सरकार, सदन में विपक्ष ने आरोप लगाया कि जब-जब जनहित के तीखे सवाल उठे, सत्ता पक्ष ने चर्चा को मोड़ने की कोशिश की। स्थिति यहां तक पहुंच गई कि सांसद प्रतिनिधि की मौजूदगी को लेकर भी विवाद हुआ और बैठक का माहौल पूरी तरह राजनीतिक अखाड़ा बन गया।

भिलाई के अधिवक्ता सुयश पांडे छत्तीसगढ़ शासन का सुप्रीम कोर्ट में करेंगे प्रतिनिधित्व, उप महाधिवक्ता नियुक्त

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भिलाई निवासी अधिवक्ता सुयश पांडे को छत्तीसगढ़ शासन द्वारा सुप्रीम कोर्ट में उप महाधिवक्ता (Deputy Advocate General) नियुक्त किया गया है। वे अब सुप्रीम कोर्ट में छत्तीसगढ़ शासन का प्रतिनिधित्व करेंगे।

सुयश पांडे ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुर्ग से प्राप्त की तथा विधि की शिक्षा हिदायतुल्लाह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर से पूर्ण की। इसके पश्चात वे दिल्ली में स्थित सुप्रीम कोर्ट, उच्च न्यायालय, राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (NCLT) एवं अन्य विधिक मंचों के समक्ष निरंतर विधि अभ्यास कर रहे हैं।

अपने विधि करियर के दौरान उन्होंने प्रारंभ में एक प्रतिष्ठित विधि फर्म में कार्य किया। इसके उपरांत उन्होंने भारत सरकार के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (Additional Solicitor General of India) के साथ एसोसिएट एडवोकेट के रूप में सेवाएं दीं। इसके पश्चात वे ट्रस्ट लॉ एडवोकेट्स एंड सॉलिसिटर्स से जुड़कर वहाँ पार्टनर के रूप में कार्य कर रहे हैं। पिछले चार वर्षों से वे सुप्रीम कोर्ट में भारत सरकार के पैनल अधिवक्ता के रूप में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं। निजी विधि अभ्यास के साथ-साथ वे शासन से जुड़ी कुछ निगमों एवं संस्थानों के लिए भी न्यायालयों में पक्ष रखते रहे हैं। इसके अतिरिक्त, वे G20 इंडिया 2023 के अंतर्गत आयोजित 20 (ग्रुप-20) में 20 ट्रैक चेयर के रूप में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके हैं। सुयश पूर्व में रूस में आयोजित विश्व युवा सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। सुयश डॉ. राजेश पांडे, पूर्व क्षेत्रीय अपर संचालक, उच्च शिक्षा विभाग, दुर्ग संभाग छत्तीसगढ़ शासन / प्राचार्य शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई के सुपुत्र हैं। सुयश सुप्रीम कोर्ट में छत्तीसगढ़ शासन का प्रतिनिधित्व करेंगे। उनकी यह नियुक्ति न केवल भिलाई बल्कि संपूर्ण छत्तीसगढ़ के लिए गर्व का विषय है।

प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना बदली लोरमी के फल विक्रेता की किस्मत

सोना कैवर्त्य को दिल्ली गणतंत्र दिवस समारोह में मिला सम्मान

नई दृष्टिबिंदु / लोरमी

लोरमी के गांधीडीह क्षेत्र में कन्या शिक्षा को मजबूती प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और दूरदर्शी पहल के अंतर्गत 04 कन्या छात्रावासों का एक ही परिसर में निर्माण पूर्ण करा लिया गया है। कलेक्टर कुन्दन कुमार के कुशल मार्गदर्शन में इन छात्रावासों का विधिवत शुभारंभ 01 जनवरी 2026 से किया जा चुका है, जिसके पश्चात छात्रावास में कक्षा पहली से लेकर कालेज तक की छात्राएं आवासरत हैं।

यह पहल न केवल छात्राओं की आवासीय समस्या का समाधान है, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास की दिशा में एक ठोस पहल भी है। आदिवासी विकास विभाग के सहायक आयुक्त शिवकुमार बांधे ने बताया कि पूर्व में छात्राओं को किराए के भवनों में रहना पड़ता था, जहां मूलभूत सुविधाओं की कमी व जगह का अभाव होने के कारण स्वीकृत सीट के अनुरूप छात्राओं को प्रवेश नहीं मिल पाता था। अब स्वयं के भवन में संचालन होने से पर्याप्त स्थान, स्वच्छता, सुरक्षा, पेयजल, शौचालय, अध्ययन कक्ष एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं संतोषजनक रूप से उपलब्ध हो पाएगी। इसका सीधा प्रभाव छात्राओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और मानसिक विकास में एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

शासन की पहल पर नव-निर्मित कन्या छात्रावासों में छात्राओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उच्च गुणवत्तापूर्ण निर्माण और सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। इन छात्रावासों में सुरक्षित एवं स्वच्छ आवास, पर्याप्त प्रकाश और वेंटिलेशन, शुद्ध पेयजल एवं स्वच्छ शौचालय, अध्ययन हेतु शांत एवं अनुकूल वातावरण के साथ ही सुरक्षा की दृष्टि से बेहतर प्रबंध जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं, जिससे छात्राएं अब निश्चिंत होकर अपनी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर सकें। यह परियोजना केवल भवन निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कन्या शिक्षा को प्रोत्साहित करने, विद्यालय छोड़ने की दर को कम करने तथा ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं को आगे बढ़ने के समान अवसर प्रदान करने की दिशा में एक मजबूत कदम है। सुरक्षित छात्रावास की उपलब्धता से अभिभावकों का भरोसा भी बढ़ा है, जिससे अधिक संख्या में बालिकाएं शिक्षा से जुड़ सकेंगी।

आदिवासियों की संस्कृति में बसती है छत्तीसगढ़ की आत्मा - राष्ट्रपति

नई दृष्टिबिंदु / बस्तर

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु बस्तर संभाग मुख्यालय जगदलपुर पहुँचीं, जहाँ उन्होंने संभाग स्तरीय बस्तर पंडुम-2026 का शुभारंभ किया। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ने इस अवसर पर कहा कि आदिवासियों की संस्कृति में छत्तीसगढ़ की आत्मा बसती है। उन्होंने बस्तर की आराध्य देवी माँ दंतेश्वरी के जयघोष के साथ अपने उद्बोधन की शुरूआत की। राष्ट्रपति ने कहा कि देश में छत्तीसगढ़ ऐसा राज्य है, जहाँ सरकार अपनी संस्कृति, जनजातीय परंपराओं और प्राचीन विरासतों को संरक्षित करने के लिए बस्तर पंडुम जैसे आयोजन कर रही है। यह आयोजन आदिवासियों की गौरवशाली संस्कृति का जीवंत प्रतिबिंब है।

जगदलपुर के ऐतिहासिक लालबाग मैदान में आयोजित इस शुभारंभ समारोह में बड़ी संख्या में आदिवासी कलाकार और विशाल जनसमूह मौजूद रहा । सभी को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि प्रदेश की विष्णुदेव सरकार छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से जनजातीय उत्थान के लिए निरंतर बेहतर प्रयास किए जा रहे हैं। पीएम जनमन, प्रधानमंत्री जनजातीय गौरव उत्कर्ष अभियान तथा नियद नेल्ला नार जैसी योजनाओं के जरिए जनजातीय समाज को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा रहा है।

राष्ट्रपति ने बस्तर क्षेत्र में आदिवासी बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष जोर देते हुए कहा कि जनजातीय बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने के लिए शासन के साथ-साथ समाज और उनके माता-पिता को भी आगे आना होगा। उन्होंने बस्तर की समृद्ध आदिवासी संस्कृति और गौरवशाली परंपराओं की सराहना करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में प्राचीन परंपराओं की जड़ें आज भी मजबूत हैं। बस्तर पंडुम जनजातीय समुदाय की पहचान, गौरव और समृद्ध परंपराओं को प्रोत्साहित करने वाला एक महत्वपूर्ण मंच है। राष्ट्रपति ने बताया कि बस्तर पंडुम में 54 हजार से अधिक आदिवासी कलाकारों ने पंजीयन कराया है, जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों से उनके गहरे जुड़ाव को दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि हिंसा का मार्ग छोड़कर माओवादी मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं, लोकतंत्र के प्रति उनकी आस्था बढ़ रही है। वर्षों से बंद विद्यालय पुनः खुल रहे हैं, दुर्गम वनांचल क्षेत्रों में सड़कें और पुल-पुलियों का निर्माण हो रहा है तथा ग्रामीणजन विकास से जुड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि बस्तर की सुंदरता और संस्कृति सदैव लोगों के आकर्षण का केंद्र रही है, किंतु दुर्भाग्यवश चार दशकों तक यह क्षेत्र माओवाद से ग्रस्त रहा, जिससे यहां के निवासियों को अनेक कष्ट झेलने पड़े।

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ने कहा कि भारत सरकार की माओवादी आतंक के विरुद्ध निर्णायक कारवाई के परिणामस्वरूप वर्षों से व्याप्त भय, असुरक्षा और अविश्वास का वातावरण अब समाप्त हो रहा है। माओवादी हिंसा का रास्ता छोड़ रहे हैं और नागरिकों के जीवन में शांति लौट रही है। प्रदेश सरकार के प्रयासों और स्थानीय लोगों के सहयोग से आज बस्तर में विकास का नया सूर्योदय हो रहा है। गाँव-गाँव में बिजली, सड़क, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँच रही हैं। वर्षों से बंद विद्यालयों में अब बच्चों की कक्षाएँ फिर से संचालित हो रही हैं। राष्ट्रपति ने उपस्थित जनसमूह से अपनी संस्कृति और पारंपरिक विरासतों को सहेजने का आह्वान करते हुए बस्तर की जनजातीय परंपराओं को राष्ट्रीय एवं वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

राज्यपाल रमेन डेका शुभारंभ समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि बस्तर पंडुम कोई साधारण मेला नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की जनजातीय लोक संस्कृति का उत्सव है। यहाँ के लोकनृत्य, लोकगीत, पारंपरिक पहनावा, आभूषण, ढोल-नगाड़े और पारंपरिक व्यंजन मिलकर बस्तर की सुंदर तस्वीर दुनिया के सामने प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कहा कि गौर नृत्य, परघौनी नृत्य तथा धुरवा, मुरिया, लेजा जैसे नृत्य बस्तर की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं। इस प्रकार के आयोजन हमारी आदिवासी संस्कृति और परंपराओं को नई पीढ़ी से जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं। राज्यपाल ने कहा कि बस्तर की पहचान उसकी जनजातीय संस्कृति और परंपराओं से है। गोंड, मुरिया, माड़िया, हल्बा, भतरा एवं परजा समाज के लोग पीढ़ियों से अपनी मूल परंपराओं को सहेजते आए हैं। जल, जंगल और जमीन के साथ सामंजस्य बस्तर की सबसे बड़ी ताकत है। बस्तर पंडुम के माध्यम से कलाकारों को पहचान, सम्मान और आजीविका के अवसर मिलेंगे। लोककला तभी जीवित रहेगी जब कलाकार खुशहाल होंगे।

राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि ढोकरा कला छत्तीसगढ़ की शान है। बस्तर में निर्मित ढोकरा शिल्प की मूर्तियाँ देश-विदेश में लोकप्रिय हैं। यह कला जनजातीय शिल्पकारों की संस्कृति, मेहनत और कौशल का प्रमाण है। बस्तर की संस्कृति केवल छत्तीसगढ़ ही नहीं, बल्कि पूरे भारत की लोक परंपराओं और विविधताओं का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने माँ दंतेश्वरी को नमन करते हुए कहा कि राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का बस्तर पंडुम में आना केवल औपचारिक उपस्थिति नहीं, बल्कि बस्तर के लिए आशीर्वाद, जनजातीय समाज के लिए सम्मान और माताओं-बहनों के लिए अपनत्व है। उन्होंने कहा कि बस्तर पंडुम केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि जनजातीय समाज के जीवन, आस्था, बोली-भाषा, नृत्य-गीत, वेशभूषा, खान-पान और जीवन-दर्शन का जीवंत प्रतिबिंब है। बस्तर केवल जंगलों की धरती नहीं, बल्कि समृद्ध संस्कृति और परंपराओं की धरती है। मुख्यमंत्री ने बताया कि बस्तर पंडुम के लिए इस वर्ष 12 विधाओं में 54 हजार से अधिक कलाकारों ने पंजीयन कराया, जिनमें जनजातीय नृत्य, गीत, नाट्य, वेशभूषा-आभूषण, शिल्प, चित्रकला, व्यंजन, पेय पदार्थ, आंचलिक साहित्य और वन-औषधियाँ शामिल हैं, जो बस्तर की संस्कृति की जीवंतता और समृद्धि को दर्शाती हैं।

अब नया बस्तर - डर की जगह भरोसा, हिंसा की जगह विकास

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि एक समय था जब बस्तर को नक्सलवाद और हिंसा के लिए जाना जाता था, लेकिन आज डर की जगह भरोसे ने और हिंसा की जगह विकास ने ले ली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दृढ़ संकल्प से 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद के समूल उन्मूलन का लक्ष्य तय किया गया है। उन्होंने कहा कि जहाँ कभी गोलियों की आवाज गूँजती थी, आज वहाँ स्कूलों की घंटी बजती है। जहाँ कभी तिरंगा नहीं लहरा पाता था, आज वहाँ राष्ट्रगान की गूंज सुनाई देती है। गणतंत्र दिवस पर बस्तर संभाग के अति-संवेदनशील गाँवों में पहली बार तिरंगा फहराया गया, जो लोकतंत्र और संविधान की जीत है।

नियद नेल्ला नार, प्रधानमंत्री जनमन और धरती आबा अभियान विकास के मील के पत्थर

मुख्यमंत्री ने कहा कि नियद नेल्ला नार योजना, प्रधानमंत्री जनमन और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान आदिवासी क्षेत्रों में विकास के मील के पत्थर हैं। इन योजनाओं से दुर्गम क्षेत्रों तक सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य और संचार सुविधाएँ पहुँची हैं। नई पुनर्वास नीति के से जो लोग कभी बंदूक के रास्ते पर थे, वे अब सम्मान के साथ समाज की मुख्यधारा में लौट रहे हैं। चिल्कापल्ली, तेमेनार और हांदावाड़ा जैसे गाँवों में वर्षों बाद बिजली पहुँची है, यह केवल रोशनी नहीं, बल्कि आशा और भविष्य का उजाला है।

जनजातीय समाज को आत्मनिर्भर और वैश्विक पहचान दिलाना हमारी प्राथमिकता

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि बस्तर की पहचान वनोपज से भी है। तेंदूपत्ता संग्रहण दर बढ़ाई गई है, चरण-पादुका योजना पुनः प्रारंभ की गई है तथा वन धन केंद्रों के माध्यम से वनोपज को उचित मूल्य और बाजार उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बस्तर के धुड़मारास गाँव को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँवों में शामिल किया गया है। चित्रकोट, तीरथगढ़, कांगेर घाटी और कोटमसर गुफाएँ केवल पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि बस्तर की पहचान हैं।

युवा अब हथियार नहीं, खेल और कला से बना रहे पहचान

मुख्यमंत्री ने कहा कि बस्तर ओलंपिक और बस्तर पंडुम जैसे आयोजन यह सिद्ध करते हैं कि बस्तर के युवा अब हथियार नहीं, बल्कि खेल और कला के माध्यम से अपनी पहचान बना रहे हैं। लाखों युवाओं और महिलाओं की भागीदारी इस बदलाव का सबसे सशक्त प्रमाण है।

बस्तर की नई पहचान को मजबूत करने का आह्वान

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका बस्तर आगमन ऐतिहासिक है। इससे कलाकारों का आत्मविश्वास बढ़ेगा, बेटियों के सपनों को उड़ान मिलेगी और बस्तर को नई ऊर्जा प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर बस्तर को शांति, समृद्धि और संस्कृति का केंद्र बनाएँगे, जिस पर पूरे देश को गर्व हो। इस अवसर पर पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने स्वागत भाषण दिया।

कोंडागांव बस्तर पंडुम पर आधारित लघु वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया तथा कोण्डागांव और बास्तानार के कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम में केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, वन मंत्री केदार कश्यप, जगदलपुर विधायक किरणदेव सिंह, सांसद महेश कश्यप, महापौर संजय पांडे, कमिश्नर डोमन सिंह, पुलिस महानिरीक्षक सुन्दरराज पी, कलेक्टर आकाश छिकारा, पुलिस अधीक्षक शलभ सिन्हा सहित जनप्रतिनिधिगण, गायता, पुजारी, मांझी-चालकी, बस्तर पंडुम के कलाकार एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना से अखिलेश कुमार बने ऊर्जादाता

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

शासन की महत्वाकांक्षी योजना पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना छत्तीसगढ़ में आम नागरिकों के जीवन में उजियारा फैला रही है। इस योजना का लाभ उठाकर न केवल लोग बिजली बिल के बोझ से मुक्त हो रहे हैं, बल्कि बिजली बेचकर ह्लऊर्जादाताह्न की नई पहचान भी बना रहे हैं। सरगुजा जिले अंतर्गत लखनपुर के रहने वाले श्री अखिलेश कुमार राजवाड़े के लिए अब सूरज की किरणें केवल उजाला ही नहीं, बल्कि आर्थिक समृद्धि भी लेकर आ रही हैं। ह्लपीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजनाह्न का लाभ उठाकर अखिलेश ने अपने घर की छत पर 2 किलोवाट का सोलर पैनल लगवाया है, जिससे उनका भारी-भरकम बिजली बिल अब पूरी तरह शून्य हो गया है।

उपभोक्ता से 'ऊर्जादाता' तक का सफर

अखिलेश बताते हैं कि सोलर पैनल लगवाने से पहले उनका मासिक बिजली बिल 2,000 से 2,500 रुपए के बीच आता था। लेकिन अब स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। उन्होंने गर्व से कहा कि पहले हम केवल बिजली के उपभोक्ता थे, लेकिन अब हम ह्लऊर्जादाताह्न बन गए हैं। अपनी जरूरत पूरी करने के बाद जो अतिरिक्त बिजली बचती है, उसे हम छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड को बेच रहे हैं, जिसका भुगतान वित्तीय वर्ष के अंत में किया जाएगा।

शासन की सब्सिडी ने बनाया राह आसान

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की वित्तीय सुगमता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि केंद्र और राज्य सरकार की ओर से मिली सब्सिडी ने सोलर पैनल लगवाना बेहद किफायती बना दिया है। अखिलेश को केंद्र सरकार से 60,000 रुपए और राज्य सरकार से 30,000 रुपए की सब्सिडी प्राप्त हुई है। इस योजना में उन्हें कुल 90,000 रुपए की आर्थिक मदद से मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए सौर ऊर्जा अपनाना अब एक सुलभ निवेश बन गया है।

पर्यावरण संरक्षण की ओर कदम

अखिलेश कुमार ने पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना को पर्यावरण के लिए भी क्रांतिकारी बताया। उनके अनुसार, पारंपरिक बिजली उत्पादन में होने वाले प्रदूषण और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के मुकाबले सौर ऊर्जा पूरी तरह स्वच्छ है। इससे न केवल आर्थिक लाभ हो रहा है, बल्कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रदूषण मुक्त वातावरण भी तैयार कर रहे हैं।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना पर कमलेश ने अपनी संतुष्टि व्यक्त करते हुए केंद्र और राज्य सरकार का आभार जताया और अन्य नागरिकों से भी इस योजना का लाभ उठाने की अपील की। उन्होंने कहा कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है, बल्कि देश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से संवरी जिंदगी आलोक को मिला रोजगार, बने आत्मनिर्भर

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में शासन द्वारा लगातार प्रयास किया जा रहा है। इसी कड़ी में मुंगेली विकासखण्ड के ग्राम खैरवार निवासी आलोक घृतलहरे की जिंदगी प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के माध्यम से संवर गई है। उन्होंने योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार प्राप्त कर आत्मनिर्भर बने और अपने जीवन को नई दिशा दी।

आलोक घृतलहरे ने बताया कि वे एक साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं। रोजगार की तलाश और भविष्य को बेहतर बनाने की चाह ने उन्हें कौशल प्रशिक्षण की ओर प्रेरित किया। उन्हें प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत सेक्टर हेल्थकेयर में प्रशिक्षण की जानकारी उन्हें अखबार एवं पाम्पलेट के माध्यम से मिली, जिसके पश्चात उन्होंने जिला परियोजना लाईवलीहुड कॉलेज, जमकोर, मुंगेली में प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण अवधि के दौरान उन्हें तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ सॉफ्ट स्किल्स एवं कंप्यूटर संचालन की भी व्यवहारिक जानकारी दी गई, जिससे उनका आत्मविश्वास के साथ कार्यकुशलता बढ़ी। प्रशिक्षण पूर्ण होने के पश्चात उनकी योग्यता को पहचानते हुए जिला अस्पताल मुंगेली में उन्हें कंप्यूटर ऑपरेटर कम टेक्नीशियन के पद पर नियुक्ति मिली।

आज आलोक न केवल आत्मनिर्भर हैं, बल्कि अपनी नियमित आय से परिवार के भरण-पोषण में अपने पिता का सहयोग भी कर रहे हैं। अपनी सफलता का श्रेय देते हुए आलोक ने कहा कि यह उपलब्धि प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, जिला परियोजना लाईवलीहुड कॉलेज जमकोर मुंगेली, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय एवं जिला प्रशासन मुंगेली के सहयोग और मार्गदर्शन से ही सम्भव हुआ। उन्होंने खुशी व्यक्त करते हुए शासन-प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया।

महतारी वंदन योजना : मातृत्व को संबल, बेटियों के भविष्य को दी सुरक्षित दिशा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ सरकार की महतारी वंदन योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उन्हें सम्मान और आत्मनिर्भरता का आधार प्रदान कर रही है। योजना के प्रभावी क्रियान्वयन से राज्यभर में महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। कोण्डागांव जिले के ग्राम पंचायत बनचपई की निवासी श्रीमती श्यामबती कोर्राम इसका प्रेरक उदाहरण हैं।

महतारी वंदन योजना की लाभार्थी श्रीमती कोर्राम को योजना के अंतर्गत प्रतिमाह एक हजार रुपये की सहायता राशि नियमित रूप से उनके बैंक खाते में प्राप्त हो रही है। इस आर्थिक सहयोग से वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति सहजता से कर पा रही हैं, जिससे उनके जीवन में आत्मविश्वास और संतोष की भावना विकसित हुई है।

श्रीमती कोर्राम ने बताया कि योजना से प्राप्त राशि का उपयोग वे अपनी दोनों बेटियों के उज्ज्वल भविष्य को सुरक्षित करने के उद्देश्य से सुकन्या समृद्धि योजना के खाते में जमा कर रही हैं। साथ ही इस सहायता राशि से पौष्टिक आहार की व्यवस्था भी संभव हो पा रही है, जिससे पूरे परिवार के स्वास्थ्य स्तर में उल्लेखनीय सुधार आया है। 12वीं तक शिक्षित श्रीमती श्यामबती कोर्राम के लिए महतारी वंदन योजना आत्मनिर्भरता की दिशा में एक मजबूत आधार बनकर उभरी है। यह योजना उन्हें न केवल आर्थिक संबल प्रदान कर रही है, बल्कि समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जीने का आत्मविश्वास भी दे रही है।

श्रीमती श्यामबती कोर्राम ने महतारी वंदन योजना के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय तथा महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह योजना महिलाओं के जीवन में सुरक्षा, स्वाभिमान और सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम बन रही है तथा माताओं को अपने बच्चों के भविष्य के प्रति आश्वस्त कर रही है।

शिक्षा और ज्ञान को नई उड़ान, बनेगा अत्याधुनिक 500 सीटर नालंदा परिसर

नई दृष्टिबिंदु / धमतरी

जिले के शैक्षणिक, बौद्धिक एवं ज्ञान आधारित विकास को नई ऊँचाई प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में जिले को बड़ी सौगात प्राप्त हुई है। नगर के प्रतिष्ठित नालंदा परिसर (सेंट्रल लाइब्रेरी सह रीडिंग जोन) को 250 सीटर से विस्तारित कर 500 सीटर किए जाने की स्वीकृति प्रदान की गई है।यह अत्याधुनिक एवं बहुमंजिला नालंदा परिसर लगभग 11 करोड़ 22 लाख रुपये की लागत से निर्मित किया जाएगा,जिससे जिले के विद्यार्थियों, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं तथा अध्ययनशील नागरिकों को उच्चस्तरीय अध्ययन सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

पूर्व में हटकेश्वर वार्ड में 250 सीटर नालंदा परिसर की स्वीकृति प्राप्त हुई थी। जिला प्रशासन एवं नगर निगम के सतत प्रयासों, सक्रिय पहल एवं निरंतर संवाद के परिणामस्वरूप मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय द्वारा इस परियोजना को और अधिक व्यापक स्वरूप प्रदान करते हुए 500 सीटर की स्वीकृति दी गई। इस विस्तार से न केवल अध्ययन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी, बल्कि जिले में आधुनिक पुस्तकालय संस्कृति को भी मजबूती मिलेगी। निर्माण पश्चात नालंदा परिसर एक आकर्षक, भव्य एवं सवर्सुविधायुक्त शैक्षणिक भवन के रूप में विकसित होगा। परिसर में शांत एवं सुव्यवस्थित अध्ययन वातावरण, डिजिटल संसाधन, ई-लाइब्रेरी, वाई-फाई सुविधा, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, वातानुकूलित अध्ययन कक्ष, लिफ्ट सुविधा तथा आधुनिक सुरक्षा व्यवस्थाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। यह परिसर विद्यार्थियों एवं युवाओं के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु एक आदर्श अध्ययन केंद्र सिद्ध होगा।

कलेक्टर अबिनाश मिश्रा ने 500 सीटर नालंदा परिसर को धमतरी जिले के शैक्षणिक वातावरण को सशक्त करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम बताया। उन्होंने कहा कि यह परिसर विद्यार्थियों एवं युवाओं को शांत, आधुनिक एवं संसाधनयुक्त अध्ययन स्थल उपलब्ध कराएगा। जिला प्रशासन द्वारा निर्माण कार्य को गुणवत्तापूर्ण, पारदर्शी एवं समयबद्ध रूप से पूर्ण कराने हेतु सभी आवश्यक प्रक्रियाएं सुनिश्चित की जाएंगी। महापौर रामू रोहरा ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य में सरकार के गठन के पश्चात सुशासन की स्थापना हुई है और विकास कार्यों को नई गति मिली है। धमतरी के प्रति मुख्यमंत्री की संवेदनशीलता एवं दूरदर्शी सोच का यह प्रत्यक्ष उदाहरण है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राज्य सरकार के सहयोग से धमतरी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगा और शिक्षा एवं अधोसंरचना के क्षेत्र में नई उपलब्धियां प्राप्त होंगी। प्रस्तावित नालंदा परिसर का निर्माण 0.60 हेक्टेयर भूमि पर किया जाएगा। इसके अंतर्गत ग्राउंड फ्लोर, फर्स्ट फ्लोर, सेकण्ड फ्लोर एवं टावर फ्लोर सहित बहुमंजिला लायब्रेरी भवन का निर्माण, एसीपी एवं वॉल क्लैडिंग कार्य, 13 पैसेंजर क्षमता की लिफ्ट तथा 70 यूनिट एयर कंडीशनिंग सिस्टम की व्यवस्था की जाएगी।

इसके अतिरिक्त परिसर में सी.सी. रोड निर्माण, पेवर ब्लॉक कार्य, बाउंड्रीवाल, गार्ड रूम, भव्य प्रवेश द्वार, लैंडस्केपिंग, बाह्य सेनेटेशन एवं जल आपूर्ति कार्य, बोरवेल, आर.सी.सी. नाली, सेप्टिक टैंक, एल.ई.डी. लाइटिंग, सोलर पैनल, ट्रांसफार्मर, सी.सी.टी.वी. कैमरा एवं आधुनिक फायर फाइटिंग सिस्टम की व्यवस्था की जाएगी। वहीं नॉन-एसओआर मद अंतर्गत आधुनिक फर्नीचर, पुस्तकों की समृद्ध व्यवस्था एवं टेंसाइल रूफ का प्रावधान रहेगा। समग्र रूप से 500 सीटर नालंदा परिसर धमतरी जिले के युवाओं के लिए ज्ञान, अनुशासन एवं उज्ज्वल भविष्य का सशक्त केंद्र सिद्ध होगा तथा जिले को शिक्षा के क्षेत्र में एक नई पहचान प्रदान करेगा।

खास खबर

'एक राष्ट्र एक राशनकार्ड' : 28 फरवरी तक होगी ई-केवाईसी

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

भारत सरकार, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग द्वारा दिये गये निर्देशानुसार जिले में 'एक राष्ट्र एक राशनकार्ड' (वन नेशन वन राशनकार्ड) योजनांतर्गत सभी हितग्राहियों को आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से खाद्यान्न वितरण किया जाना है। जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत 4,96,354 राशनकार्ड प्रचलित है। इन राशनकार्डों में 16,86, 164 सदस्य पंजीकृत है। इन सदस्यों में 14,86,690 सदस्यों का ई-केवाईसी पूर्ण हो गया है। 1,99,474 लाख सदस्यों का ई-केवाईसी शेष है। भारत सरकार द्वारा 05 वर्ष से कम उम्र के सदस्यों को ई-केवाईसी में छूट दिया गया है। खाद्य नियंत्रक दुर्ग से मिली जानकारी अनुसार सभी उचित मूल्य दुकानों में संचालित ई-पॉस मशीन में ई-केवाईसी की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा जारी 'मेरा ई-केवाईसी' एप के माध्यम से भी ई-केवाईसी की जा सकती है।

आंगनबाड़ी सहायिका पद के लिए ऑनलाइन आवेदन 9 से

दुर्ग। एकीकृत बाल विकास परियोजना दुर्ग-ग्रामीण दुर्ग के अंतर्गत आंगनबाड़ी केन्द्र ननकट्ठी-04 के एक रिक्त सहायिका पद हेतु आवेदन आमंत्रित किया गया था, जिसमें संशोधन करते हुए पात्र इच्छुक आवेदिका से 9 फरवरी 2026 से 12 फरवरी 2026 तक ई-भर्ती पोर्टल ँ३३स्र२://६६.ी-ुँ१३.ह्र के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किया गया है। अधिक जानकारी के लिए एकीकृत बाल विकास परियोजना कार्यालय दुर्ग-ग्रामीण जिला दुर्ग में कार्यालयीन समय में संपर्क कर सकते हैं।

नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन 'डॉल्स हाउस', 'असमंजस बाबू' और 'वो फिर आएगी' की सशक्त प्रस्तुतियाँ

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नाटकों ने दशर्कों को गहराई से प्रभावित किया। इस अवसर पर डॉल्स हाउस, असमंजस बाब और वो फिर आएगी नाटकों की प्रभावशाली प्रस्तुतियाँ हुई, जिन्हें दशर्कों से भरपूर सराहना मिली।

कार्यक्रम की शुरुआत विश्वप्रसिद्ध नाटककार हेनरिक इब्सन द्वारा लिखित नाटक ए डॉल्स हाउस से हुई, जिसका निर्देशन अमित कुमार पटेल ने किया। यह नाटक उन्नीसवीं सदी की महिला नोरा हेल्मर के जीवन पर आधारित है, जो अपने अहंकारी पति टोरवाल्ड के साथ एक गुड़िया की तरह जीवन जीने को विवश होती है। पति द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठा को प्राथमिकता देने और नोरा की पहचान तथा निस्वार्थता को नकारे जाने के बाद, नोरा विवाह और समाज द्वारा थोपी गई रूढ़ भूमिकाओं को अस्वीकार कर आत्मनिर्भरता का मार्ग चुनती है।

नाटक में नारीवाद, वैवाहिक समानता, सामाजिक दिखावे और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे महत्वपूर्ण विषयों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया। यह प्रस्तुति अंग्रेजी भाषा में मंचित की गई। इसके पश्चात अख्तर अली द्वारा लिखित नाटक असमंजस बाबू का मंचन किया गया, जिसका निर्देशन डॉ. शिशु कुमार सिंह (अतिथि व्याख्याता, थिएटर विभाग) ने किया। यह नाटक मनुष्य के भीतर उत्पन्न होने वाले संदेह, निर्णय की दुविधा और मानसिक असमंजस को उजागर करता है। साथ ही यह आज के समय में व्यक्ति की व्यक्तिगत सोच और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच होने वाले टकराव को भी दर्शाता है। नाटक दशर्कों को यह सोचने पर विवश करता है कि एक सामान्य व्यक्ति का जीवन किस प्रकार अनेक मानसिक द्वंद्वों से घिरा होता है।

कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति वो फिर आएगी नाटक की रही, जो प्रसिद्ध रूसी नाटककार एंटोन चेखव की रचना का हिंदी रूपांतरण है। इस नाटक की प्रस्तुति ने भी दशर्कों की खूब तालियां बटोरीं। इस अवसर पर अधिष्ठाता डॉ. मानस साहू, सहायक प्राध्यापक कौस्तुभ रंजन, अतिथि व्याख्याता डॉ. प्रमोद पांडेय सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

तनाव से भागें नहीं बल्कि उसके पहचानकर स्वीकार करें और कम करने के उपाय करें-गुरलीन चाने

आयोजन

शंकराचार्य महाविद्यालय में तनाव मुक्ति पर एक दिवसीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

श्री शंकराचार्य महाविद्यालय में तनाव मुक्ति पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अंतरराष्ट्रीय क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट गुरलीन चाने थीं। उन्होंने तनाव की विस्तृत परिभाषा देते हुए उससे निपटाने का आसान तरीके बताए। उन्होंने कहा कि तनाव से भागें नहीं बल्कि उसके पहचानकर स्वीकार करें और कम करने के उपाय करें। सुश्री गुरलीन ने बताया कि तनाव का स्रोत आपके शरीर या मन में हो सकता है। पर इसका असर आपके पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है।

यदि आपके शरीर के किसी अंग में कोई दिक्कत हो तो आपका मन भी उससे जुड़ जाता है। जब तनाव बढ़ता है तो व्यवहार भी बदलने लगता है जिसका प्रभाव आपके आसपास रहने वाले लोगों के साथ आपके संबंधों पर भी पड़ता है। उन्होंने विद्यार्थियों एवं व्याख्याताओं तथा प्राध्यापकों को कुछ आसान से अभ्यास करवाकर उन्हें हैप्पी हॉरमोन्स रिलीज करने के तरीके बताए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुषमा दुबे ने किया।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. अर्चना झा, अकादमिक डीन डॉ. दुर्गा प्रसाद राव, पत्रकार दीपक रंजन दास, व्याख्याता एवं प्राध्यापकों के अलावा शिक्षा संकाय के प्रशिक्षणार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इसके बाद संडे कैम्पस के सहयोग से एक विचारगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें सुश्री गुरलीन चाने के साथ प्राचार्य डॉ अर्चना झा, मनोविज्ञान की प्राध्यापक द्वय डॉ. गायत्री जय मिश्रा एवं डॉ. कंचन सिन्हा के अलावा डॉ. सुषमा दुबे, डॉ. जयश्री वाकणकर ने सहभागिता की। इस सत्र का संचालन पत्रकार दीपक रंजन दास ने किया।

विद्यार्थी नवाचारपूर्ण विचारों को सामने लाएं, चेम्बर प्लेटफार्म उपलब्ध कराने में करेगा मदद - भसीन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के महामंत्री अजय भसीन के दिल्ली प्रवास के दौरान छत्रपति यूनिवर्सिटी, कोल्हापुर के विद्यार्थियों ने उनसे सौजन्य भेंट की। संसद भवन में हुई इस मुलाकात में छात्रों ने चेम्बर ऑफ कॉमर्स की गतिविधियों और उसकी भूमिका के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की।

श्री भसीन ने विद्यार्थियों को बताया कि चेम्बर ऑफ कॉमर्स व्यापारियों और उद्योगों को एक साझा मंच प्रदान करता है, जहाँ नए विचारों और योजनाओं को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है। उन्होंने छात्रों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे अपने नवाचारपूर्ण विचारों को सामने लाएँ, जिन्हें चेम्बर प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराकर आगे बढ़ाने का कार्य करेगा। इस दौरान छात्रों ने भी अपनी रुचि व्यक्त करते हुए बताया कि वे कोल्हापुर में स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने के लिए इंक्यूबेशन सेंटर चला रहे हैं और उन्होंने चेम्बर को वहाँ आमंत्रित किया। छात्रों ने चेम्बर के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि वे भविष्य में व्यापार और उद्योग जगत से जुड़कर समाज के विकास में योगदान देना चाहते हैं। इस अवसर पर चेम्बर के महामंत्री अजय भसीन को विद्यार्थियों ने सम्मानित भी किया।

श्री भसीन ने कहा कि यह संवाद युवाओं और उद्योग जगत के बीच सहयोग की नई शुरुआत है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले समय में छत्रपति यूनिवर्सिटी और छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स मिलकर स्टार्टअप्स और नवाचार को बढ़ावा देंगे। इस मुलाकात ने स्पष्ट किया कि शिक्षा जगत और उद्योग जगत का सहयोग ही भविष्य की आर्थिक प्रगति और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में सबसे मजबूत कदम है।

उप मुख्यमंत्री शर्मा ने हितग्राहियों को सौंपी सौगातें

नई दृष्टिबिंदु / कोरबा

स्थानीय सर्किट हाऊस में शुक्रवार की शाम उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा के मुख्य आतिथ्य में आयोजित एक गरिमामय समारोह में शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का सीधा लाभ जब जमीनी स्तर पर उतरा, तो हितग्राहियों के चेहरे खिल उठे। उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, वन मंत्री केदार कश्यप एवं विधायक किरण सिंह देव ने विभिन्न विभागों के माध्यम से पात्र लोगों को सामग्री और सहायता राशि वितरित कर सबका साथ, सबका विकास के मंत्र को चरितार्थ किया।

कार्यक्रम के दौरान सबसे भावुक और उत्साहजनक क्षण तब देखने को मिले जब समाज कल्याण विभाग की ओर से दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने की पहल की गई। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा, वनमंत्री श्री कश्यप एवं विधायक श्री देव ने करण नाग, संजय सांतरा और विजय मौर्य को मोटराइज्ड ट्राई साइकिल सौंपी, जिससे अब उनकी जिंदगी की रफ्तार नहीं थमेगी। इसी क्रम में राकेश कुमार मिश्रा को कृत्रिम पैर और विपिन सिंह को श्रवण यंत्र प्रदान कर उन्हें समाज की मुख्य धारा में सम्मान के साथ जीने का संबल दिया गया। शिक्षा और तकनीक के महत्व को रेखांकित करते हुए समग्र शिक्षा अभियान के तहत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों, विवेक कुमार और सुभद्रा को मोबाइल किट तथा जयबती और गायत्री को टैबलेट वितरित किए गए, ताकि ये बच्चे डिजिटल युग के साथ कदमताल कर सकें।

महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान) के तहत महिला समूहों को बड़े संसाधन सौंपे गए। जागृति, तिरंगा, इंद्रावती और झांसी की रानी महिला क्लस्टर संगठनों को ईंट-सीमेंट निर्माण इकाई के संचालन हेतु चेक व स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए। यह पहल ग्रामीण महिलाओं को उद्यमी बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगी। इस अवसर पर कमिश्नर डोमन सिंह, आईजी सुंदरराज पी, सीईओ जिला पंचायत प्रतीक जैन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

उन्नत जनपद पंचायत : 5 राज्यों के सीईओ व बीडीओ को मिला प्रशिक्षण

नई दृष्टिबिंदु / सरगुजा

छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, ठाकुर प्यारेलाल राज्य पंचायत एवं ग्रामीण विकास संस्थान द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में उन्नत जनपद पंचायतों की स्थापना के उद्देश्य से बीडीओ एवं सीईओ हेतु छः दिवसीय राष्ट्रीय स्तर का क्षमता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 27 जनवरी से 1 फरवरी तक आयोजित किया गया, जिसमें राजस्थान, ओडिशा, गुजरात, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों से आए कुल 26 अधिकारियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में पूर्ण संतृप्ति लाने हेतु नेतृत्व द्वारा समृद्ध विकासखंडों का निर्माण विषय के अंतर्गत जनपद स्तर पर समग्र ग्रामीण विकास को गति देना रहा।

प्रशिक्षण का शुभारंभ ठाकुर प्यारेलाल राज्य पंचायत एवं ग्रामीण विकास संस्थान के संयुक्त संचालक सी. सोम मिश्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के संस्थागत ढांचा, नेतृत्व विकास, सहभागितामूलक योजना निर्माण, पंचायत राज अधिनियम, पेसा अधिनियम, सतत विकास लक्ष्य, ग्राम पंचायत विकास योजना, विकासखण्ड विकास योजना, जिला विकास योजना, राजस्व तथा आजीविका एवं वित्तीय समावेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण के अंतर्गत जिला रायपुर के जनपद पंचायत अभनपुर में विकासखंड विकास योजना पर आधारित एक दिवसीय क्षेत्रीय अध्ययन भ्रमण भी आयोजित किया गया। इस दौरान प्रतिभागियों ने स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं हितग्राहियों से संवाद कर जमीनी वास्तविकताओं को समझा तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय, अनुसूचित क्षेत्रों, आदिवासी संस्कृति एवं पेसा के जमीनी क्रियान्वयन का प्रत्यक्ष अध्ययन किया।

पांचवें दिवस प्रतिभागियों द्वारा प्राप्त अनुभवों के आधार पर विकासखण्ड विकास योजना आधारित योजना निर्माण एवं राज्यवार समूह प्रस्तुतियाँ दी गईं। सभी प्रतिभागियों को टीएमपी पोर्टल पर फीडबैक प्रस्तुत करने के पश्चात प्रशिक्षण कार्यक्रम का औपचारिक समापन किया गया। कार्यक्रम के सफल संचालन में ठाकुर प्यारेलाल राज्य पंचायत एवं ग्रामीण विकास संस्थान एवं राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के संकाय सदस्यों, विशेषज्ञों एवं सहयोगी अधिकारियों का योगदान रहा।

निरीक्षण कोंडागांव के मोर सुआद-दीदी की रसोई में पारंपरिक व्यंजनों का चखा स्वाद

राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने केशकाल में सड़क उन्नयन कार्य का लिया जायजा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के मुख्य आतिथ्य में शनिवार को आयोजित होने वाले संभाग स्तरीय बस्तर पंडुम कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जगदलपुर आगमन से पूर्व छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका एवं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय शुक्रवार को सड़क मार्ग से रायपुर से जगदलपुर के लिए रवाना हुए। इस दौरान मुख्यमंत्री साय ने केशकाल नगर क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग-30 पर प्रगतिरत नवीनीकरण कार्य का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने सड़क निर्माण कार्य की गुणवत्ता, प्रगति एवं वतर्मान स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय राजमार्ग-30 बस्तर संभाग को राजधानी रायपुर एवं अन्य राज्यों से जोड़ने वाला एक प्रमुख मार्ग है, अतः निर्माण कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि सड़क निर्माण कार्य निर्धारित मापदंडों के अनुरूप उच्च गुणवत्ता के साथ पूर्ण करें।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कलेक्टर को निर्देश दिए कि केशकाल नगर के साथ-साथ केशकाल बायपास का निर्माण कार्य भी निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूर्ण गुणवत्ता के साथ कराया जाए तथा निर्माण कार्य की नियमित निगरानी सुनिश्चित की जाए, जिससे आम नागरिकों को सुगम एवं सुरक्षित आवागमन की सुविधा प्राप्त हो सके।

तत्पश्चात राज्यपाल रमेन डेका और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय कोंडागांव पहुंचे, जहां उन्होंने बिहान योजना के अंतर्गत स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा संचालित 'मोर सुआद दीदी की रसोई' का अवलोकन किया। इस दौरान बिहान समूह की महिलाओं ने राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री का पारंपरिक रूप से आत्मीय स्वागत किया गया। इस दौरान राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने स्थानीय व्यंजन फरा एवं अंगाकर रोटी का स्वाद चखा।

मुख्यमंत्री श्री साय ने समूह की महिलाओं से उनकी आय एवं गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की तथा कलेक्टर श्रीमती नूपुर राशि पन्ना को निर्देश दिए कि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को आजीविका सशक्तिकरण हेतु निरंतर प्रोत्साहित किया जाए और उन्हें आवश्यक सहयोग प्रदान किया जाए। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के प्रयास ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करते हैं। इस दौरान मुख्यमंत्री द्वारा जिले के लोक कलाकारों की पेंटिंग्स का अवलोकन किया गया तथा कलाकारों से संवाद कर उनके रचनात्मक प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, बस्तर सांसद महेश कश्यप, कोंडागांव विधायक सुश्री लता उसेंडी सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

साधु-संतों ने राजिम कल्प कुंभ 2026 में अव्यवस्था पर जताई नाराजगी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राजिम कल्प कुंभ 2026 की सूची से साधु-संतों के नाम हटाए जाने को लेकर संत समाज में भारी आक्रोश है। इसी मुद्दे पर रायपुर के संत, महंत, पुजारी और पुरोहितों ने कड़ा विरोध जताते हुए दोषियों के खिलाफ कारर्वाई की मांग की है। इस विषय को लेकर कचना रोड स्थित सुरेश्वर महादेव पीठ में आपात बैठक आयोजित की गई।

बैठक में राजिम कल्प कुंभ 2026 के सचिव आचार्य डॉ। राजेश्वरा नंद ने पूरे घटनाक्रम पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने सचिव पद से इस्तीफा देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि पूर्व में जिन साधु-संतों के नाम सूची में शामिल थे, उन्हें बिना किसी कारण हटाया गया है, जिसका उन्हें गहरा खेद है।

आचार्य राजेश्वरानंद ने बताया कि संत समाज की मांग पर ही सरकार द्वारा उन्हें राजिम कल्प कुंभ 2026 का सचिव नियुक्त किया गया था, जिससे संत समाज में खुशी की लहर दौड़ी थी, लेकिन तैयारियों के दौरान उनकी लगातार उपेक्षा की गई। न तो उन्हें किसी बैठक में बुलाया गया और न ही कोई सूचना दी गई। वहीं संतों के नाम सूची से हटाए जाने से असंतोष और बढ़ गया है।

संपादकीय

एंटी नार्कोटिक्स टास्क फोर्स गठन सराहनीय फैसला तो है

वैसे तो अवैध शराब, गांजा सहित सूखा नशा कई राज्यों के लिए बड़ी चुनौती है लेकिन कई राज्यों से घिरे होने के कारण छत्तीसगढ़ के लिए यह एक जटिल चुनौती है। पुलिस इनकी तस्करी रोकने अपने स्तर पर प्रयास करती है लेकिन वह सफल नहीं हो पाती है, जितनी नशे का सामान वह पकड़ती है, जब्त करती है,उससे कई गुना नशे का सामान राज्य से होकर दूसरे राज्य चला जाता है और कई राज्यों से नशे का सामान छत्तीसगढ़ भी पहुंच जाता है। नशे के सामान की अवैध बिक्री रोकने के लिए आबकारी व पुलिस वाले तो हैं लेकिन वह पूरी तरह नहीं रोक पाते हैं क्योंकि पुलिस व आबकारी विभाग भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं है। वहां ऊपर से नीचे तक व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण प्रदेश को नशामुक्त करने की योजना तो बनाई जाती रही है लेकिन योजना सफल नहीं होती है तो इसीलिए पुलिस व आबकारी में बहती गंगा में हाथ धोने का मोह से बहुत कम लोग बचे पाते हैं।

कोई विभाग जितना पुराना होता है, उसके कमर्चारी जितने पुराने हो जाते हैं, समय के साथ वह बहती गंगा में हाथ धोने की बुरा नही मानते हैं. होता यह है कि ईमानदार आदमी भी ऐसे में ज्यादा दिन ईमानदार नहीं रह पाता है, उसे ईमानदार रहने नहीं दिया जाता है या वह खुद ही औरों जैसा हो जाना ठीक समझने लगता है। इससे तस्करों व विभाग के लोगों के बीच बरसों का एक संबंध बन जाता है तो इसी संबंध के चलते नशे के हर तरह के अवैध धंधे को रोक पाना संभव नहीं रहता है ।कारवाई के नाम पर कभी कभी अभियान चला दिया जाता है, कुछ लोगों को गिरफ्तार कर दिखा दिया जाता है कि देखों हम तो नशे के धंधे को समाप्त करने के लिए क्या कुछ नहीं कर रहे हैं। आंकड़ो के आधार पर देखा जाए तो पांच साल में पांच हजार लोगों पर कारवाई की गई है ।रायपुर में वर्ष २५ के दौरान नशा तस्करी के ५५० से अधिक आरोपियों को जेल भेजा गया है ।अगस्त २५ में रायपुर पुलिस ने अंतरराष्ट्रीय ड्रग सिंडीकेट का भंडाफोड़ किया था और एक करोड़ रुपए से अधिक की हेरोइन जब्त की थी।

छत्तीसगढ़ की भौगोलिक बनावट ऐसी है कि यह नशे का सामान की तस्करी करने वालों के वरदान जैसी है छत्तीसगढ़ से ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, यूपी, मप्र, झारखंड और महाराष्ट्र की सीमा लगती है ।इसी वजह से छत्तीसगढ़ होकर नशे का बहुत सारा सामान जाता है और यहां भी बड़ी मात्रा में खपाने का प्रयास किया जाता है ।माना जाता है कि ओडिशा के मलकानगिरी व कोरापुट से गांजा व हशीश छत्तीसगढ़ से ही होकर जाता है। जशपुर के रास्ते ब्राउन शुगर की सप्लाई होती है। जो पंजाब से लाई जाती है ।मप्र यूपी सीमा से डोडा वअफीम की तस्करी होती है ।राज्य में कई जगह एमडीएमए व हशीश आयल की तस्करी से संकेत मिल रहे हैं कि यहां नशे के नए सामान भी खपाने का प्रयास हो रहा है। पिछली सरकारों ने परंपरागत रूप से नशे के सामान की तस्करी रोकने के लिए जो महकमा था उसके जरिए ही इसे रोकने का प्रयास किया। ऐसे प्रयासों से लगता जरूर है कि सरकार नशे का धंधा करने वालों के खिलाफ कुछ कर रही है लेकिन इससे नशे का धंधा कभी खत्म नहीं होता है ।नशे का धंधा करने वालों को मालूम है कि छत्तीसगढ़ में नशे का धंधा कैसे किया जा सकता है ।पुलिस व आबकारी वालों को भी मालूम है कि इस धंधे के बंद हो जाने से उनको कोई फायदा नहीं है इसलिए वह भी वही करते हैं जिससे उनको फायदा होता है।

छत्तीसगढ़ में साय सरकार नशे की तस्करी रोकने कुछ नया करने का प्रयास कर रही है। साय सरकार ने प्रदेश में मादक पदार्थों की तस्करी और नशे के जाल को पूरी तरह समाप्त के लिए निर्णायक कदम उठाने का सराहनीय फैसला किया है उसने राज्य को नशामुक्त बनाने के लिए फैसला किया है कि रायपुर,बिलासपुर व दुर्ग सहित दस संवेदनशील जिलों में एंटी नाकोटिक्स टास्क फोर्स का गठन किया जाएगा। यह काम तो पहले हो जाना था क्योंकि राज्य में हुए डीजी आईजी कान्फ्रेंस के दौरान पीएम मोदी व गृहमंत्री अमित शाह ने इन आतंकवाद से निपटने समन्वित रणनीति पर जोर दिया था ।अमित शाह ने तो कहा था नशे के तस्करों के खिलाफ कारवाई तो हो साथ ही उनकी अवैध संपत्ति भी जब्त करने का काम तेजी से किया जाए। ऐसा राज्य में कम ही किया जा रहा है। पहले की तुलना मे गांजा तस्करों की सजा तो सुनाई जा रही है लेकिन माना जा रहा है कि जेल भेजे गए तस्करों की संपत्ति जब्त करने में कोताही की जा रही है ।प्रदेश को साय सरकार को नशामुक्त करना है तो अमित शाह ने जैसा कहा है वैसा करना होगा। यानी तस्कर पकड़े जाएं, सजा हो और उनकी अवैध संपत्ति जब्त भी की जाए

जयंती पर विशेष

इंसानियत से भरा एक पत्रकार : रमेश नैयर

डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा

आज के दौर में पत्रकारिता की आड़ में अपने स्वार्थपरक कार्यों को करवाने व निजी लाभों के लिए सत्ता के गलियारों में राजनेताओं के इर्दगिर्द नियमित कूल्हे हिलाने वाले पत्रकार तो बहुत मिलेंगे, पर ऐसे विरले ही पत्रकार होते हैं जो नैतिक मूल्य और जन सरोकार को सदैव्य प्राथमिकता देते हुए ईमानदारी से पत्रकारिता को एक मिशन के रूप में जीते हों ' लोक सेवा का माध्यम मानकर सदैव जनपक्षधर रहते हुए स्व. रमेश नैयर ' ने निष्ठा और प्रतिबद्धता से जीवन-भर पत्रकारिता की ' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का यह कथन 'पत्रकारिता भाषा, विचार और चरित्र-तीनों की परीक्षा है' के एक उदाहरण रहे है, रमेश नैयर ' पत्रकार, संपादक, लेखक, साहित्यकार, अनुवादक के रूप में रमेश जी ने अपने आप को सफलतापूर्वक स्थापित किया ' अपनी ज्ञानवर्धक, प्रभावी व रोचक शैली के कारण लोग उनके व्याख्यानों में जुटते व एकाग्रता से उन्हें सुनते थे ' सरलता, सहजता और विनम्रता उनके व्यक्तित्व के नैसर्गिक तत्व थे '

रमेश नैयर का जन्म 10 फरवरी 1940 में जिला गुजरात पश्चिमी पंजाब (जो बाद में पाकिस्तान का हिस्सा बना) के कुंजाह गाँव में हुआ था' फक्कड़ प्रकृति के उनके पिता प्रकाश नाथ नैयर का समूचा परिवार इसी गाँव के अपने जमींदार मामा शाहजी की हवेली में रहता था 'नैयर जी की पैदाईश व परवरिश यहीं हुई' पहली कक्षा के दाखिले के लिए अपने लाडले रमेश को शाहजी घोड़े पर बिठा कर गाजे-बाजे के साथ स्कूल लेकर गए थे' स्कूल में रमेश जी एक साल ही पढ़ सके । तभी भारत-पाकिस्तान के विभाजन को लेकर स्थितियां विकराल होने लगी । मार-काट शुरू होने पर गांव के कुछ हिन्दुओं के साथ पिता पहले दिल्ली आये, फिर वे मथुरा में अपने साढ़ू के पास आ गए। बाद में, गुजरात जिले में स्थिति ज्यादा ही बिगड़ने लगी। मुसलमानों के झुंड हथियार लेकर गलियों में लगभग रोजाना चिह्नाते व धमकाते गुजरते हुए खून-खराबा करने लगे ' शाह जी के मुंशी कालू खान और घर की आया जैनम ने कई बार हिंसा पर उतारू उत्पातियों से शाहजी के घर व परिवार को नुक़सान से बचाया 'एक बार तो वे तलवार लहराते हुए हवेली में घुस आए। डर-सहमी जैनम ने रमेश जी को अपनी गोद में लेकर शाल में छुपा लिया । किसी तरह से रमेश जी की जान बची थी । इस घटना के बाद शाहजी काफी डर गए और फिर किसी तरह गांव से निकलकर भारत जाने का सुरक्षित मौका तलाशने लगे । अनुकूल स्थिति के दिन मुंशी कालू खान रमेश जी, बहन पवन व उनकी मां कृष्ण प्यारी और शाह जी को एक बग्घी में बैठा कर लाहौर ले आये ' जहाँ से परिवार मथुरा आया 'पिता प्रकाश नाथ ने यहां लकड़ी का टाल खोला और उसकी आय से परिवार की गुजर-बसर होने लगी

है। रमेश जी ने यहां स्कूल में दाखिला लिया है और यही से इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूर्ण की ' इस बीच 1956 में रायपुर से पिता की मामी मथुरा आई और उनकी आर्थिक व रहन सहन की दयनीय हालात देखकर परिवार को रायपुर ले आईं । रायपुर में मामा भीम सेन सरीन आढ़तिया का काम करते थे ।गुजर-बसर के लिए उन्होंने पिता प्रकाश नाथ को रायपुर में राशन की दुकान खुलवाई और फिर बाद में उन्होंने किराना स्टोर खोला ।रमेश जी ने शासकीय विज्ञान महाविद्यालय में प्रवेश लेकर बीए की डिग्री हासिल की 'बाद में उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर डिग्री ली ' पं रविशंकर विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग में अध्ययनरत होकर भाषा विज्ञान में एमए किया '

पुरानी भिलाई के जनता स्कूल में शिक्षक के रूप में उन्होंने नौकरी शुरू की' डेढ़ वर्ष अध्यापन करने के बाद हिंदी 'दैनिक युगधर्म' के रायपुर संस्करण में 1965 से 1973 तक उप संपादक व सहायक संपादक रहे 'उसके बाद अंग्रेजी 'दैनिक एमपी क्रॉनिकल' के रायपुर संस्करण में 74 से 79 तक सहायक संपादक का कार्य किया ' 1978 से 1982 तक बिलासपुर से प्रकाशित 'दैनिक लोकस्वर' के संस्थापक संपादक रहे ' 'दैनिक ट्रिब्यून' चंडीगढ़ में 1983 से 1988 तक सहायक संपादक के पद पर कार्य किया' हिंदी साप्ताहिक 'संडे ऑब्जर्वर' के 1989 से 1992 तक कार्यकारी संपादक रहे ' 1993 से 2002 तक 'दैनिक भास्कर' रायपुर के संपादक का दायित्व निभाया' जनवरी 2006 में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा उन्हें छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी के संचालक बनाया गया ' 2016 तक इस अकादमी को उन्होंने अपनी सेवाएं दी'

घर में सबसे बड़े होने के कारण परिवार के लालन-पालन की जिम्मेदारी रमेश जी नौकरी लगते ही ही गई थी ' अपने से छोटे भाई श्याम सुन्दर, बहन पवन, निर्मला, भाई ललित व सबसे छोटी बहन उमिलां की परवरिश करते हुए उनकी शिक्षा व विवाह आदि करवाने की जिम्मेदारी गरिमा के साथ निभाही ' रमेश जी का विवाह 2 मई 1966 में इंद्र मोहिनी से हुई थी ' रमेश जी के बड़े पुत्र संजय रायपुर में व छोटे पुत्र संदीप वर्किंगघम (इंग्लैण्ड) में सोफ्टवेयर इंजिनीयर हैं '

हिंदी, अंग्रेजी, गुरुमुखी व उर्दू भाषाओं के जानकार रमेश जी की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई ' उनके संपादन में व्यंग रचनाओं की प्रकाशित पुस्तकें ह्यबुक ऑफ चारा रिकॉर्ड्स' तथा 'साधु जग बोराना'चर्चित रहीं ' कहानियों के दो संकलन 'उत्तर कथा' तथा 'कथा यात्रा' ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली ने प्रकाशित किये थे ' 'भारत एक आहत सभ्यता', ह्यमाटी मेरे देश की', 'रहस्यमय टापू' 'अलिफ लैला' तथा 'वारिस'शीर्षक से अनुवाद की पांच पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं ' इसके अलावा 'धूप के शामियानें' शीर्षक से आलेखों का संकलन प्रकाशित हुआ था '

रमेश जी का देश की कई प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा सम्मान्नित किया गया था ' स्वर्गीय देवीलाल चौबे की स्मृति में प्रथम 'वसुंधरा सम्मान' 2001 में रमेश जी को दिया 'इस पुरस्कार में मिली समूची सम्मान निधि उन्होंने मंच से ही बालिका शिक्षा हेतु जिला साक्षरता समिति दुर्ग के अध्यक्ष कलेक्टर को सौंप दी थी ' 1984 में ऑल इंडिया आर्टिस्ट एसोसिएशन शिमला द्वारा उन्हें 'स्पेशल जर्नलिज्म सम्मान' प्रदान दिया गया था 'माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय भोपाल ने 2012 में उन्हें गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकार सम्मान से सम्मानित किया था 'कोलकाता की बंगाली साहित्य परिषद ने उन्हें 2014 में ह्यस्वामी विवेकानंद पत्रकार रत्न सारस्वत सम्मान' से विभूषित किया था ' 2015 में मधुबन भोपाल द्वारा 'श्रेष्ठतम पत्रकार सम्मान' उन्हें प्रदान किया गया था ' दशकों तक अपने आलेखों, सम्पादकीय लेखन, रपटों व व्याख्यानों से ज्ञान की रौशनी फैलाने वाले रमेश जी 2 नवंबर 2022 को हम सबसे हमेशा के लिए अलविदा हो गए '

केंद्र के अनुरोध

सुप्रीम कोर्ट के जज न्यायमूर्ति उज्जल भूइंया ने यह सटीक प्रश्न उठाया है कि किसी जज का एक से दूसरे हाई कोर्ट में सिर्फ इसलिए क्यों तबादला होना चाहिए कि उसने सरकार के लिए कोई 'असुविधाजनक निर्णय दिया हो ?

जब संभल के चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट विभांशु सुधीर का विवादित तबादला चर्चा में है, सुप्रीम कोर्ट ने जज उज्जल भूइंया ने उच्चतर न्यायपालिका के जजों के तबादले के पीछे की राजनीतिक कहानी पर से परदा हटा कर काफी कुछ उजाले में ला दिया है । न्यायमूर्ति भूइंया ने पूछा कि किसी जज का एक से दूसरे हाई कोर्ट में सिर्फ इसलिए क्यों तबादला होना चाहिए कि उसने सरकार के लिए कोई 'असुविधाजनक निर्णयइ दिया हो ? हालांकि न्यायमूर्ति ने कोई नाम नहीं लिया, लेकिन अनुमान लगाया गया है कि उनका इशारा बीते अक्टूबर में मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के जज अतुल श्रीधरन के तबादले की ओर था।

जस्टिस श्रीधरन ने कर्नल सोफिया कुरैशी मामले में मध्य प्रदेश के एक मंत्री के बयान का संज्ञान लिया था। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट की कॉलेजियम ने पहले उनका तबादला छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट किया, लेकिन तुरंत ये फैसला बदल कर उन्हें इलाहाबाद हाई कोर्ट भेज दिया गया । अब साफ है कि ऐसा केंद्र के अनुरोध पर किया गया। आम चर्चा है कि इस रूप में सरकार कॉलेजियम के तबादला संबंधी कई फैसलों के प्रभावित कर चुकी है। और जब उच्चतर न्यायपालिका में ये हाल हो, तो निचली अदालतों के बारे में सहज अनुमान लगाया जा सकता है। सीजेएम सुधीर ने संभल की हिंसा के मामले में पुलिस अधिकारी पर मामला दर्ज करने का निर्देश दिया। उसके कुछ ही दिन बाद उनका तबादला हो गया।

जस्टिस भूइयां ने उचित चेतावनी दी है कि ऐसी घटनाएं भारतीय न्यायपालिका की साख पर बट्टा लगा रही हैं। उन्होंने कहा- 'अगर हमने अपनी साख खो दी, तो न्यायपालिका में कुछ नहीं बचेगा। जज रहेंगे, अदालतें भी रहेंगी, मुकदमों पर फैसले भी होंगे, लेकिन दिल और आत्मा का लोप हो जाएगा ।इ तमाम जजों को न्यायमूर्ति भूइयां की इन बातों पर भी गौर करना चाहिए कि न्यायापालिका के पास ना तो धन होता है, ना तलवार । उसमें लोगों का भरोसा ही उसकी कुल जमा-पूंजी है। बड़े परिश्रय में देखें, तो मुद्दा सिर्फ न्यायपालिका नहीं है। सबको इसका ख्याल रखना चाहिए कि इसकी साख चूकने का अर्थ पूरी शासन व्यवस्था के औचित्य को संदिग्ध कर देगा।

ईरान को सबक सिखाने के लिए साम दाम दंड भेद की नीति अपना रहे हैं ट्रंप

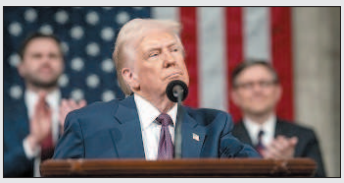

अमेरिका और ईरान के बीच तनातनी चरम पर होने के बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक नया कायकरी आदेश जारी कर उन सभी देशों पर अतिरिक्त आयात शुल्क लगाने की चेतावनी दी है जो ईरान के साथ किसी भी तरह का व्यापार जारी रखेंगे। आदेश में शुल्क की दर तय नहीं की गई है, पर उदाहरण के तौर पर पच्चीस प्रतिशत का जिक्र है। साफ कहा गया है कि जो भी देश सीधे या परोक्ष रूप से ईरान से सामान या सेवा खरीदगा, उस पर यह शुल्क लगाया जा सकता है। ट्रंप ने अलग से बयान देते हुए दोहराया कि ईरान को परमाणु हथियार नहीं मिलना चाहिए।

यह कदम ऐसे समय आया है जब ओमान में दोनों देशों के वरिष्ठ प्रतिनिधियों के बीच बातचीत हुई है। कई सप्ताह की बयानबाजी और धमकियों के बाद शुरू हुई यह बातचीत तनाव कम करने की कोशिश मानी जा रही है, पर जमीन पर हालात अब भी तने हुए हैं। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने ओमान में वार्ता को अच्छी शुरुआत बताया, लेकिन साथ ही कहा कि अविश्वास का माहौल गहरा है, खासकर इसलिए कि हाल ही में अमेरिका ने इजराइल के साथ मिलकर ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमला किया था। ट्रंप ने भी वार्ता को बहुत अच्छी बताया, पर साथ में चेतावनी जोड़ी कि यदि समझौता नहीं हुआ तो नतीजे बहुत सख्त होंगे।

अमेरिका का कहना है कि वह केवल परमाणु कार्यक्रम नहीं, बल्कि ईरान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम, सशस्त्र समूहों को समर्थन और अपने नागरिकों के साथ व्यवहार जैसे मुद्दे भी बातचीत में शामिल करना चाहता है। दूसरी ओर तेहरान का रुख साफ है कि चर्चा केवल परमाणु कार्यक्रम पर होगी और उसे यूरेनियम संवर्धन का अधिकार मिलना चाहिए। ईरान का दावा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरी तरह शांतिपूर्ण है और वह हथियार बनाने की कोशिश नहीं कर रहा।

हम आपको बता दें कि इस तनातनी की जड़ें पिछले एक दशक में लिए गए फैसलों में हैं। वर्ष 2015 के परमाणु समझौते के तहत ईरान को सीमित स्तर तक यूरेनियम संवर्धन की अनुमति थी और उस पर सख्त निगरानी थी। बदले में उस पर लगे कई प्रतिबंध हटाए गए थे। लेकिन ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में वर्ष 2018 में इस समझौते से अमेरिका को अलग कर लिया था और कठोर प्रतिबंध फिर लगा दिए थे। तेल निर्यात, जहाजरानी और बैंक तंत्र पर पाबंदियों ने ईरान की अर्थव्यवस्था को भारी चोट दी। जवाब में ईरान ने समझौते की कई शर्तों से आगे बढ़ कर संवर्धन करना शुरू कर दिया।

बीते वर्षों में हालात और बिगड़े। वर्ष 2020 में ईरानी कमांडर कासिम सुलेमानी मेरिकी हमले में मारे गए, जिससे टकराव खतरनाक स्तर पर पहुंच गया। फिर संयुक्त राष्ट्र में प्रतिबंध फिर लगाने की कोशिशें हुईं। वर्ष 2025 में अमेरिका ने इजराइल के साथ मिलकर ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमला किया, जिसके बाद ईरान ने कतर में एक अमेरिकी ठिकाने पर मिसाइल दागी, हालांकि जान का नुकसान नहीं हुआ। पिछले वर्ष पश्चिमी देशों के प्रयास से संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सैन्य प्रतिबंध फिर लागू हुए।

अब ताजा कदम के तहत अमेरिका ने ईरानी तेल और पेट्रो रसायन से जुड़े पंद्रह संस्थानों और कई जहाजों पर भी प्रतिबंध लगाए हैं। उधर इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने सुरक्षा मंत्रिमंडल की बैठक बुलाकर ईरान को चेताया कि किसी भी हमले का जोरदार जवाब मिलेगा। उनका कहना है कि अमेरिका के साथ तालमेल बहुत गहरा है, इसलिए अंतिम फैसला ट्रंप ही करेंगे। ट्रंप ने भी कहा है कि ईरान बातचीत इसलिए कर रहा है क्योंकि वह अमेरिकी हमले से बचना चाहता है और अमेरिकी नौसैनिक बेड़ा इलाके में आगे बढ़ रहा है। सवाल यह है कि क्या यह पूरी कवायद शांति की राह है या दबाव की रणनीति का नया दौर ? ट्रंप का शुल्क हथियार दरअसल आर्थिक घेराबंदी का विस्तार है। संदेश साफ है कि जो ईरान से नाता रखेगा, वह अमेरिकी बाजार से हाथ धो सकता है। यह नीति कई देशों को कठिन दुविधा में डालेगी, खासकर वे देश जो ऊर्जा जरूरतों के लिए ईरानी तेल पर निर्भर हैं। इससे वैश्विक ऊर्जा बाजार, समुद्री रास्तों की सुरक्षा और पश्चिम एशिया की सामरिक रिश्वत पर सीधा असर पड़ेगा।

सामरिक दृष्टि से यह रस्साकशी खतरनाक है। एक ओर बातचीत चल रही है, दूसरी ओर युद्ध की तैयारी जैसे संकेत दिए जा रहे हैं। बेड़े की तैनाती, मिसाइल की चर्चा और प्रतिबंधों की बौछार मिलकर ऐसा माहौल बनाते हैं जहां एक छोटी चिंगारी भी बड़े संघर्ष में बदल सकती है। ईरान भी झुकने के मूड में नहीं दिखता और वह बार बार अपने अधिकार की बात दोहरा रहा है। बहरहाल, हकीकत यह है कि न तो केवल दबाव से समाधान निकलेगा, न केवल बयान से। यदि दोनों पक्ष सच में टकराव टालना चाहते हैं तो उन्हें भरोसे की बहाली, चरणबद्ध रियायत और स्पष्ट लक्ष्यों की राह पकड़नी होगी। वरना शुल्क, प्रतिबंध और हमले का यह चक्र पूरे इलाके को अस्थिर कर देगा और इसका असर दुनिया की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा पर दूर तक जाएगा। अभी भी समय है कि शक्ति प्रदर्शन की जगह समझदारी दिखाई जाए, नहीं तो आने वाले दिन और ज्यादा उथल पुथल लेकर आ सकते हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा और राहुल गांधी की राजनीतिक अपरिपक्वता

नीति-निर्माण, राष्ट्रीय सुरक्षा और संसदीय विमर्श जैसे गंभीर विषय किसी भी लोकतंत्र की रीढ़ होते हैं। संसद केवल सत्ता और विपक्ष के टकराव का मंच नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सामूहिक विवेक और जिम्मेदार अभिव्यक्ति का सर्वोच्च स्थल है। ऐसे में जब राष्ट्रपति के अभिभाषण जैसे संवैधानिक और गरिमामय अवसर पर चर्चा चल रही हो, तब किसी भी नेता से यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि वह शब्दों, संदर्भों और समय-तीनों के प्रति अतिरिक्त सावधानी बरते। हालिया घटनाक्रम में लोकसभा में प्रतिनक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा पूर्व थलसेना प्रमुख जनरल एम. एम. नरवणे की अप्रकाशित पुस्तक के कुछ अंशों का हवाला देकर चीनी सेना की कथित घुसपैठ को लेकर जो बयान दिया गया, उसने इसी अपेक्षा पर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए। सरकार का आरोप रहा कि इस बयान ने लोकसभा को गुमराह करने का प्रयास किया, जबकि विपक्ष ने इसे सच दबाने की कोशिश बताकर पलटवार किया। परिणाम यह हुआ कि संसद की कार्यवाही बाधित हुई, तीखी बहस ने पूरे दिन का सत्र स्थगित करा दिया और राष्ट्रीय विमर्श का केंद्र मूल मुद्दों से हटकर आरोप-प्रत्यारोप बन गया।

यह प्रश्न केवल एक वक्तव्य का नहीं, बल्कि राजनीतिक परिपक्वता, जिम्मेदारी और राष्ट्रीय हित की समझ का है। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े विषयों पर सार्वजनिक वक्तव्यों में संवेदनशीलता अनिवार्य होती है। सीमाओं से जुड़े तथ्य, सैन्य तैनाती, रणनीतिक आकलन-ये सब ऐसे विषय हैं जिन पर आधे-अधूरे संदर्भ या चयनित उद्धरण अनावश्यक भ्रम पैदा कर सकते हैं। यही कारण है कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और गृह मंत्री अमित शाह ने इसे संसदीय नियमों के उल्लंघन और राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़ बताया। लोकसभा अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था देने के बावजूद यदि किसी नेता का अपने वक्तव्य पर अड़े रहना कार्यवाही को ठप कर दे, तो सवाल उठता है कि क्या उद्देश्य सच सामने लाना था या राजनीतिक लाभ साधना। विपक्ष का दायित्व सत्ता से सवाल करना है, यह लोकतंत्र का प्राण है। किंतु सवालों की भाषा, मंच और समय-तीनों लोकतांत्रिक मर्यादाओं से बंधे होते हैं। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा का समय सरकार की नीतियों, उपलब्धियों और भविष्य की दिशा पर समग्र विमर्श का होता है। उस दौरान सैन्य पुस्तकों के चयनित अंशों को राजनीतिक हथियार बनाना, वह भी बिना समुचित संदर्भ और संस्थागत प्रक्रिया के, स्वाभाविक रूप से विवाद को जन्म देता है। विपक्ष का यह कहना कि सरकार असहज प्रश्नों को दबाना चाहती है, एक परिचित एवं बेतुका राजनीतिक तर्क है; परंतु सरकार का यह कहना कि राष्ट्रीय सुरक्षा को राजनीतिक रंग देना अनुचित है, उतना ही वजनदार प्रतिवाद है। दोनों पक्षों के बीच संतुलन वहीं संभव है, जहां तथ्य, प्रक्रिया और समय का सम्मान हो।

संसद के भीतर अप्रकाशित ह्यसंस्मरणह्ल के जिक्र पर विवाद होना स्वाभाविक है। क्योंकि संसदीय परंपराओं और स्थापित नियमों के अनुसार किसी भी सदस्य द्वारा संसद के पटल पर ऐसी प्रकाशित या अप्रकाशित पुस्तक, लेख या पत्रिका की सामग्री को प्रमाण के रूप में उद्धत करना स्वीकार्य नहीं

है, जिसे सदन के समक्ष औपचारिक रूप से प्रस्तुत (टेबल) न किया गया हो। विशेष रूप से ऐसी पुस्तकों या लेखों के अंश, जिनकी न तो संसदीय सत्यापन प्रक्रिया हुई हो और न ही जिन्हें सदन की अनुमति से अभिलेखित किया गया हो, उन्हें तथ्यात्मक प्रमाण मानना संसदीय मर्यादा के विरुद्ध है। इस दृष्टि से राहुल गांधी द्वारा किसी अप्रकाशित पुस्तक के अंशों को सीधे उद्धत कर उन्हें नीतिगत या राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर अंतिम सत्य के रूप में प्रस्तुत करना न केवल संसदीय नियमों की अवहेलना है, बल्कि इससे सदन की गरिमा और कार्यवाही की विश्वसनीयता भी आहत होती है।

राहुल गांधी केवल कांग्रेस के नेता ही नहीं, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष हैं। कम से कम राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले में तो उन्हें भारतीय सेनाओं के नैरेटिव के साथ खड़े होना चाहिए। दुर्भाग्य से वे ऐसा नहीं करते। वे चीन और पाकिस्तान को लेकर मोदी सरकार को तो घेरते हैं, लेकिन यह स्मरण नहीं रखते कि इन दोनों देशों ने भारतीय भूभाग पर तब अतिक्रमण किया, जब कांग्रेस सत्ता में थी। गलवान में चीनी सेना के साथ खूनी टकराव के मामले में तत्कालीन सेनाध्यक्ष की अप्रकाशित पुस्तक के कथित अंश का जैसा उल्लेख राहुल गांधी ने किया, उस पर हंगामा होना ही था। आखिर जो पुस्तक प्रकाशित ही नहीं हुई, उसका उल्लेख राहुल कैसे कर सकते हैं ? राहुल गांधी का आरोप कि मोदी सरकार ने चीनी सेना के अतिक्रमणकारी रवैये पर साहस नहीं दिखाया, बेबुनियाद एवं भ्रमित करने वाला आरोप है। यह पहली बार नहीं है, जब राहुल गांधी ने यह कहने की कोशिश की हो कि प्रधानमंत्री मोदी चीन का डटकर मुकाबला करने से बचते हैं। वे मोदी सरकार को कमजोर दिखाने के लिए यह भी कहते रहे हैं कि चीन ने हमारी जमीन पर कब्जा कर रखा है। वे यहां तक कह चुके हैं कि चीनी सेना ने भारतीय सैनिकों की पिटाई की थी। इसके लिए उन्हें सुप्रीम कोर्ट की फटकार भी सुननी पड़ी थी। इसके बाद भी वे यह समझने के लिए तैयार नहीं कि राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले में सतही आरोपों के आधार पर राजनीति नहीं करनी चाहिए। जबकि सच्चाई यह है और सब जानते हैं कि गलवन में चीनी सेना को करारा जवाब मिला था और इसी कारण वह वार्ता की मेज पर आया और लद्दाख में कई इलाकों में यथास्थिति कायम हो पाई।

कांग्रेस की भूमिका पर भी गंभीर आत्ममंथन आवश्यक है। एक समय देश को नेतृत्व देने वाली पार्टी आज बार-बार ऐसे प्रसंगों में उलझती दिखती है, जहां बयानबाजी मुद्दों पर भारी पड़ जाती है। राहुल गांधी एक प्रभावशाली वक्ता हैं, जनभावनाओं को छूने की क्षमता रखते हैं और युवाओं में संवाद स्थापित कर सकते हैं। किंतु यही कारण है कि उनसे अधिक जिम्मेदारी की अपेक्षा भी की जाती है। बार-बार ऐसे मुद्दे उठाना जिन्हें सत्ता पक्ष राष्ट्रीय एकता के लिए घातक बताता हो, कांग्रेस की छवि को गैर-जिम्मेदार विपक्ष के रूप में मजबूत करता है। यह धारणा चाहे पूरी तरह सही न हो, लेकिन राजनीति में धारणा भी उतनी ही प्रभावशाली होती है जितना तथ्य। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो परिपक्वलोकतंत्रों में राष्ट्रीय सुरक्षा पर बहस के लिए अलग-अलग संसदीय समितियां, बंद सत्र और संस्थागत प्रक्रियाएं होती हैं। सार्वजनिक मंचों पर बयान देते समय नेता प्रायः संकेतों और नीतिगत प्रश्नों तक सीमित रहते हैं, विस्तृत सैन्य विवरणों से परहेज करते हैं। भारत में भी ऐसी परंपरा विकसित होनी चाहिए, जहां विपक्ष सरकार से जवाबदेही मांगे, परंतु सेना और सुरक्षा संस्थानों की साख को राजनीतिक संघर्ष का अखाड़ा न बनाया जाए। यही संतुलन लोकतंत्र को मजबूत करता है। लेकिन राहुल गांधी पूर्व में भी सैन्य बयानों से न केवल सुरक्षा के लिये खतरा बनते रहे हैं बल्कि हमारे जवानों के मनोबल को भी आहत करते रहे हैं। यह भी सच है कि सरकार को पारदर्शिता से घबराना नहीं चाहिए। यदि विपक्ष किसी पुस्तक, रिपोर्ट या बयान का हवाला देता है, तो उसका संस्थागत और तथ्यपरक उत्तर दिया जाना चाहिए। केवल नियमों के उल्लंघन का हवाला देकर बहस को समाप्त करना भी स्वस्थ परंपरा नहीं कही जा सकती। राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर पूर्ण मौन भी लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व के विपरीत है। अतः दोनों पक्षों को अपनी-अपनी सीमाएं पहचाननी होंगी।

अंततः प्रश्न राहुल गांधी की परिपक्वता का भी है। परिपक्वता का अर्थ चुप रहना नहीं, बल्कि यह समझना है कि कौन-सा प्रश्न कब, कहां और कैसे उठाया जाए। एक राष्ट्रीय नेता से अपेक्षा होती है कि वह भावनात्मक आवेग के बजाय रणनीतिक विवेक से काम ले। इसी तरह विपक्ष की सामूहिक जिम्मेदारी है कि वह संसद को ठप करने के बजाय उसे प्रभावी बहस का मंच बनाए। संसद का स्थगन किसी की जीत नहीं, बल्कि लोकतंत्र की हार होता है। इस पूरे प्रसंग ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया है कि भारत जैसे विविध और संवेदनशील लोकतंत्र में शब्दों की शक्ति अत्यंत गहरी है। राष्ट्रीय एकता केवल सीमाओं की रक्षा से नहीं, बल्कि जिम्मेदार राजनीति से भी सुरक्षित रहती है। कांग्रेस को यह सोचना होगा कि क्या तात्कालिक राजनीतिक लाभ दीर्घकालिक विश्वसनीयता से अधिक महत्वपूर्ण है। राहुल गांधी को यह आत्मविश्लेषण करना होगा कि नेतृत्व केवल सवाल उठाने से नहीं, बल्कि मर्यादित और समयबद्ध विवेक से भी बनता है। और सरकार को यह याद रखना होगा कि सशक्त राष्ट्र वही है जो सवालों से नहीं, बल्कि जवाबों से मजबूत होता है। यदि यह संतुलन स्थापित हो सका, तभी संसद का प्रत्येक सत्र वास्तव में राष्ट्र के हित में सार्थक सिद्ध होगा।

प्रमुख खबरें

संत कवि पवन दीवान की पुण्यतिथि कल

गरियाबंद। स्वामी अमृतानंद संत कवि पवन दीवान की पुण्यतिथि आज मनाई जाएगी। श्रीमद् भागवत महापुराण में इनके द्वारा कहे जाने वाले कथा को सुनने के लिए लोग टूट पड़ते थे। लोगों के दिलों में राज करने वाले दीवान जी 2 मार्च 2016 को ब्रह्मलीन हो गए। स्वामी अमृतानंद स्मृति छत्तीसगढ़ ब्रह्मचर्य आश्रम न्यास समिति राजिम के अध्यक्ष संतोष उपाध्याय एवं श्री राजीव लोचन मंदिर ट्रस्ट के मैनेजर पुरुषोत्तम मिश्रा ने बताया कि इस मौके पर चरण पादुका पूजन तथा संस्कृत विद्यापीठ के छात्रों के द्वारा मंत्रोचार किया जाएगा और भोजन प्रसादी प्रदान की जाएगी।

सीनियर महिला वनडे, छत्तीसगढ़ की दूसरी जीत

रायपुर। बीसीसीआई की ओर से आयोजित सीनियर महिला वनडे ट्रॉफी 2026 में छत्तीसगढ़ महिला टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए उत्तराखंड को 4 विकेट से शिकस्त दी। दोनों टीमों के बीच यह मुकाबला 8 फरवरी 2026 को गुजरात के बड़ोदरा में खेला गया। टॉस जीतकर छत्तीसगढ़ ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए उत्तराखंड की टीम ने निर्धारित 50 ओवर में 9 विकेट पर 234 रन बनाए। टीम की ओर से राघवी ने सबसे ज्यादा 77 रन की पारी खेली। इंद्राणी (43 रन) और कंचन (40 रन) ने भी अहम योगदान दिया।

10वीं-12वीं बोर्ड का परीक्षा शुल्क 5 साल में 460 से 800

रायपुर। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल (माशिमं) ने करीब पांच साल बाद 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षाओं के शुल्क में बढ़ोतरी कर दी है। यह बढ़ा हुआ शुल्क शैक्षणिक सत्र 2026-27 से लागू होगा। नए प्रावधान के तहत नियमित परीक्षार्थियों को अब बोर्ड परीक्षा, अंकसूची और प्रति विषय प्रैक्टिकल शुल्क मिलाकर 800 रुपए चुकाने होंगे, जबकि पहले इसके लिए 460 रुपए देने पड़ते थे। बोर्ड परीक्षा के आवेदन फॉर्म के शुल्क में भी 70 रुपए की बढ़ोतरी की गई है। पहले जहां आवेदन शुल्क 80 रुपए था, अब इसे बढ़ाकर 150 रुपए कर दिया गया है। प्रवेश पत्र की द्वितीय प्रति के शुल्क में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसके लिए अब भी 80 रुपए ही देने होंगे।

गुलजार हुआ मैत्रीबाग

25 फीट का शेर और 30 फीट का बारहसिंघा बने आकर्षण का केन्द्र

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

भिलाई। मैत्रीबाग में रविवार को फ्लावर शो देखने के लिए करीब 40 हजार लोग जुटे। खूबसूरत रंग बिरंगे फूल, विशालकाय लौकी सहित अन्य सब्जियां, फ्लावर डेकोरेशन, रंगोली वगैरह लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहे। बीएसपी स्कूल सेक्टर 7 की प्रिंसिपल रुबी बर्मन राय क्वीन आफ द शो और रीना दीक्षित किंग आफ द शो घोषित की गई।

बीएसपी के डायरेक्टर इंचार्ज चित्तरंजन महापात्र मुख्य अतिथि थे। अध्यक्षता ईडी एचआर पवन कुमार ने की। इस साल पर्यटकों में विशेष उत्साह नजर आया। लगभग 40 हजार लोगों ने यह शो देखा। 25 फीट के शेर और 30 फीट के बारासिंघा के मॉडल दर्शकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने। इसके साथ ही कई कलात्मक रचनाओं ने लोगों का दिल जीत लिया।

इस विशेष आयोजन ने प्रकृति प्रेमियों और पर्यटकों को खासा आकर्षित किया. इस फ्लावर शो में बीएसपी और नॉन-बीएसपी के रेसिडेंशियल और मिडिल स्कूल के स्कूल हाउस गार्डन ने हिस्सा लिया. जिसमें सेक्टर 1 से सेक्टर 10 तक के प्रतिभागी शामिल रहे. इसके अलावा हॉस्पिटल सेक्टर, मरोदा सेक्टर, रिसाली और रूआबांधा क्षेत्र के प्रतिभागियों ने भी इसमें भाग लिया.

फ्लावर शो में कई किस्मों के फूलों की विभिन्न श्रेणियों में आयोजित प्रतियोगिताओं ने पूरे परिसर को रंगों और खुशबुओं से सराबोर कर दिया। फ्लावर शो को देखने सिर्फ भिलाई ही नहीं, बल्कि अलग-अलग राज्यों से भी पर्यटक आए थे। आयोजन के तहत हाई स्कूल गार्डन, पॉटेड प्लांट, कट फ्लावर, फ्लोरल डेकोरेशन, फल और सब्जियों से बने मॉडल ने दर्शकों का दिल जीता. इसके अलावा रंगोली, माला निर्माण, बुके और सलाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। किंग ऑफ द शो और क्वीन ऑफ द शो जैसे आकर्षक पुरस्कार भी प्रतिभागियों को प्रदान किए गए, जिससे प्रतियोगिता का रोमांच और बढ़ गया।

खेल मड़ई बना स्वास्थ्य और सौहार्द का मंच - महिला बाल विकास मंत्री

इंटर प्रेस क्रिकेट में बढ़ाया खिलाड़ियों का बढ़ाया हौसला

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

रायपुर। महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि अच्छे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए खेल अत्यंत आवश्यक हैं। पत्रकारों की व्यस्त दिनचर्या के बावजूद खेलों के प्रति उनका उत्साह सराहनीय है। उन्होंने रायपुर प्रेस क्लब द्वारा आयोजित खेल मड़ई को प्रेरणादायक पहल बताते हुए सभी आयोजकों और प्रतिभागी टीमों को शुभकामनाएं दीं।

रायपुर प्रेस क्लब द्वारा स्वर्गीय कुलदीप निगम की स्मृति में खेल मड़ई के अंतर्गत नेताजी सुभाष स्टेडियम, रायपुर में इंटर प्रेस क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता में पत्रकार जगत की विभिन्न टीमों के बीच उत्साहपूर्ण और रोमांचक मुकाबले खेले जा रहे हैं। आयोजन का उद्देश्य पत्रकारों को उनकी व्यस्त दिनचर्या से कुछ समय निकालकर खेलों से जोड़ना, आपसी सौहार्द को बढ़ावा देना और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करना है।

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने मैदान में पहुंचकर प्रतियोगिता में भाग ले रहे पत्रकार खिलाड़ियों से मुलाकात की और उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने खिलाड़ियों की खेल भावना की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन आपसी सहयोग, टीम भावना और सकारात्मक ऊर्जा को मजबूत करते हैं।

इस अवसर पर रायपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष मोहन तिवारी, महासचिव गौरव शर्मा, उपाध्यक्ष दिलीप साहू, कोषाध्यक्ष दिनेश यदु, सहसचिव निवेदिता साहू एवं भूपेश जांगड़े, खेल आयोजन समिति के संयोजक विजय मिश्रा सहित बड़ी संख्या में पत्रकारगण उपस्थित रहे।

वैवाहिक फिजूलखर्ची को छोड़ कर बाबा गुरू घासीदास के बताए सादगी की राह पर चलें : मंत्री खुशवंत साहेब

- राज्य सरकार द्वारा गुरु घासीदास बाबा के मेला आयोजन के लिए राशि स्वीकृत की गई है

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

रायपुर। कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, अनुसूचित जाति विकास विभाग मंत्री गुरु खुशवंत साहेब रविवार को सारंगढ़ में प्रदेश स्तरीय सतनामी समाज युवक युवती परिचय सम्मेलन में शामिल हुए।

मंत्री गुरु खुशवंत साहेब ने कहा कि बाबा गुरु घासीदास जी के सादा जीवन, उच्च विचार के जो संदेश दिए गए हैं जो संस्कृति और संस्कार बताए गए हैं, उसके सादगी विवाह की परम्परा को हमें गर्व के साथ अपनाने की जरूरत है। केबिनेट मंत्री ने कहा कि, जिस प्रकार आज हम दिखावे की ओर आगे बढ़ रहे हैं। दिखावे की शादी में धन का खर्च बहुत ज्यादा है। लड़का ढूंढना है या लड़की ढूंढना है तो हम सब लोगों को कितनी परेशानी होती है। आज लोग विवाह को सम्मान और इज्जत के रूप में देखते हैं और मन मुताबिक शादी करते हैं भले ही कर्ज लेना पड़े। दिखावे से थोड़ा उठके हमें सादा विवाह की राह बहुत पहले गुरु घासीदास ने दी है। इसमें किसी प्रकार का खर्च नही है। समाज में एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना स्थापित करें।

मंत्री ने कहा कि गिरौदपुरी हो, भंडारपुरी हो, लालपुर धाम हो, चाहे हर जगह के लिए करोड़ों रुपए पैसा स्वीकृत है। किसी प्रकार के कोई कमी नहीं है सिर्फ धार्मिक स्थल की उन्नति और विकास है।

सारंगढ़ में प्रतिवर्ष बाबा गुरु घासीदास जी की जयंती मनाई जा रही है। छत्तीसगढ़ सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह ने इसके लिए राशि स्वीकृत की है जो आजतक चल रही है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय हमारा लगातार सहयोग कर रहे हैं। शिक्षा के स्तर में भी सीजीपीएससी में एसडीएम, डिप्टी कलेक्टर बनते हैं, उसकी फ्री कोचिंग की व्यवस्था राज्य सरकार ने की है। पायलट प्रोजेक्ट भी शुरू किए हैं। छत्तीसगढ़ सरकार सबका साथ, सबका विकास के मूलमंत्र से सर्व समाज की उन्नति और विकास के लिए कार्य कर रही है।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष संजय भूषण पांडे, सदस्य लता लक्षमे, सांसद प्रतिनिधि संतोष सोनवानी, पूर्व विधायक सनम जांगड़े केराबाई मनहर, निर्मल सिन्हा, ज्योति पटेल, सुभाष जालान, अजय गोपाल, वेदराम जांगडे, हरिनाथ खूंटे, शिव कुमारी चौहान बी डी भारद्वाज, आयोजक अजय कोसले सहित बड़ी संख्या में युवक युवती, पालक, सतनामी विकास परिषद के सदस्य और पत्रकारगण उपस्थित थे।

राजधानी में अगले छह माह में दौड़ने लगेंगी 40 ई-बसें

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। मंत्रालय के कर्मचारियों और आम नागरिकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए रायपुर से नवा रायपुर के बीच अगले छह महीनों में ई-बसों का संचालन प्रारंभ किया जाएगा। यह परियोजना केंद्र सरकार के सहयोग से संभव हो रही है, जिससे नवा रायपुर में आवागमन सुगम होगा और वहां की बसाहट को बढ़ाने के सरकारी प्रयासों को भी बल मिलेगा।

नवा रायपुर स्थित मंत्रालय और सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने वाले लोगों के लिए पिछले सात-आठ वर्षों से चल रहा इंतजार अब समाप्त होने वाला है। प्रशासन ने रायपुर और नवा रायपुर को जोड़ने के लिए 40 इलेक्ट्रिक बसों के संचालन की तैयारी पूरी कर ली है। नवा रायपुर अटल नगर विकास प्राधिकरण (एनआरडीए) ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए डीवी प्रोजेक्ट लिमिटेड को चुना है।

कंपनी को 73.80 रुपये प्रति किलोमीटर की दर से टेंडर दिया गया है। अनुबंध के अनुसार, वर्कआर्डर मिलने के छह महीनों के भीतर ई-बसें सड़कों पर दिखाई देने लगेंगी। यह अनुबंध 10 वर्षों की अवधि के लिए किया गया है, जिससे परिवहन व्यवस्था में स्थिरता बनी रहेगी।

ई-बसों के सुचारू संचालन के लिए बुनियादी ढांचे पर भी काम शुरू हो चुका है। एनआरडीए ने चीचा क्षेत्र में एक अत्याधुनिक डिपो का निर्माण कार्य प्रारंभ कर दिया है। इस डिपो में बसों की पार्किंग और रखरखाव के लिए विशेष वर्कशाप के साथ ही बसों को चार्ज करने के लिए चार्जिंग पाइंट भी स्थापित किए जाएंगे। बसों की आवाजाही पर नजर रखने के लिए कंट्रोल रूम भी स्थापित किया जाएगा, ताकि लाइव मानिटरिंग की जा सके।

नई ई-बसें न केवल पर्यावरण के अनुकूल होंगी, बल्कि सुरक्षा की दृष्टि से भी उन्नत होंगी। यात्रियों की सुविधा के लिए इनमें कई विशेष फीचर्स जोड़े गए हैं। प्रत्येक बस सीसीटीवी कैमरों और जीपीएस से लैस होगी। यात्रियों को अगले स्टॉप और रूट की जानकारी डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर मिलेगी।

चंदन कुमार, सीईओ, एनआरडीए का कहना है कि ई-बसों के संचालन के लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। हमारा लक्ष्य अगले छह महीने में ई-बसों का संचालन शुरू करना है। इससे यात्रियों को एक आधुनिक, सुरक्षित और पर्यावरण मित्र परिवहन का विकल्प मिलेगा।

> रायपुर से नवा रायपुर का अधिकतम किराया 45 रुपये रखा जा सकता है। एनआरडीए के अधिकारियों के अनुसार, डीजल बसों को चरणबद्ध तरीके से हटाकर इलेक्ट्रिक बसों को प्राथमिकता दी जाएगी। इससे ईंधन की लागत कम होगी और रायपुर तथा नवा रायपुर के शांत वातावरण में प्रदूषण का स्तर भी घट जाएगा।

अनछुआ छत्तीसगढ़

इस मंदिर में शिवलिंग ग्रीष्म में दो भागों में विभक्त हो जाता है जिसे भगवान का अर्धनारीश्वर रूप कहा जाता है। जैसे शिवलिंग स्वयमेव विभक्त होता है, उसी तरह वह अपने आप जुड़ भी जाता है। इस मंदिर की ख्याति इतनी है कि साल भर यहां श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। महाशिवरात्रि पर यहां भक्तों का विशाल जमावड़ा लगता है।

15 फरवरी को महाशिवरात्रि के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन किया जायेगा जिसमें 14 व 15 फरवरी रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा।

बेलदार सिवनी
साल में 3 बार रंग बदलता शिवलिंग

बेलदार राजा की राजधानी बेलदार सिवनी में एक अद्भुत प्राचीन शिवलिंग है जो साल में तीन बार अपना स्वरूप बदलता है इस प्रतिमा को लोग धरती फोड़ महादेव के नाम से भी जानते हैं।

खरोरा। रायपुर जिले के तिल्दा ब्लॉक में स्थित बेल्दारसिवनी गांव के एक अनोखे शिवलिंग है। इस प्राचीन शिवलिंग को स्थानीय लोग 'धरतीफोड़ महादेव' के नाम से जानते हैं।

यह मंदिर कितना पुराना है, इसके बारे में गांव के 80 साल के बुजुर्ग भी नहीं बता पाए। यह क्षेत्र कभी बेल्दार राजा की राजधानी हुआ करता था।

मंदिर के चारों ओर लगभग 1000 वर्ग फीट में फैला एक कुंड है। कहा जाता है कि सावन के महीने में इस कुंड की गंदगी और दुर्गंध अपने आप गायब हो जाती है। बेल्दारसिवनी अपनी पूर्ण शराबबंदी के लिए भी प्रसिद्ध है। सालों पहले गांव वालों ने कड़ा फैसला लेकर शराब बेचने और पीने वालों पर पाबंदी लगा दी थी जिसकी परंपरा आज भी जारी है।

इस कुंड को अब शिव कुंड का नाम दिया गया है और इस कुंड के बीच में लक्ष्मी नारायण भगवान की प्रतिमा स्थापित है चारों ओर द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन देखने को मिलते हैं।

बेलदार सिवनी के इस धरतीफोड़ महादेव को अर्धनारीश्वर भी कहा जाता है। ग्रामीणों से मिली जानकारी के अनुसार गर्मी के दिनों में ढाई फीट ऊंची और 8 इंच विकास की प्रतिमा बीचो-बीच दो भागों में विभक्त हो जाती है तब इस प्रतिमा में अर्धनारीश्वर महादेव की झलक दिखाई देती है। सावन के महीने में यह प्रतिमा अपनी पूर्ण आकृति को प्राप्त करती है तब इसे जड़ महादेव के नाम से लोग जानते हैं। ठंड के दिनों में प्रतिमा चिकनी और तैलीय काले रंग की हो जाती है गर्मी में प्रतिमा खुरदुरा होकर अपना चोला छोड़ती है। इसके बावजूद इस मंदिर की सुरक्षा पर शासन या पुरातत्व विभाग का ध्यान अब तक नहीं गया है ग्रामीण खुद समय-समय पर इसका जीर्णोद्धार करते हैं। इसी तारतम्य में गांव के पूर्व सरपंच व वर्तमान जनपद सदस्य मुकेश वर्मा ने मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए संकल्प लिया एवं बाबा अर्द्धनारीश्वर मंदिर जीर्णोद्धार निर्माण समिति बेलदार सिवनी का गठन किया।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह साल में तीन बार अपना स्वरूप बदलता है:

गर्मी में: प्रतिमा बीच से दो भागों में बंट जाती है, जिससे इसमें अर्धनारीश्वर (आधा शिव, आधा शक्ति) का रूप स्पष्ट दिखाई देता है। इस दौरान यह खुरदुरा भी हो जाता है।

सावन (बरसात) में: यह वापस अपनी पूर्ण आकृति में आ जाता है, जिसे लोग 'जड़-महादेव' कहते हैं।

ठंड में: शिवलिंग का रंग गहरा काला हो जाता है और इसकी सतह चिकनी व तैलीय दिखाई देने लगती है।

विगत 2 से 3 वर्ष में दानदाताओं के सहयोग से मंदिर का भव्य स्वरूप का निर्माण कराया। परिसर से लगे कुंड में ही 12 ज्योर्तिलिंग व शिव मंदिर में अन्य देवी देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। 5 फरवरी को कलश यात्रा निकाली गई। 6 फरवरी को वेदी पूजन और आधिवास यज्ञ संपन्न हुआ। 7 फरवरी को प्रातः 10 बजे से भगवान की प्राण-प्रतिष्ठा, हवन-पूजन, पूर्णाहुति एवं विशाल भोग-भंडारे का आयोजन किया गया।

दर्शनार्थियों ने मंदिर परिसर पर बने कुंड में म्यूजिकल फाउंटेन की मांग शासन से की है जिससे मंदिर की भव्यता और बढ़ जाए। मान्यता के अनुसार लोगों मांग भगवान भोलेनाथ जरूर सुनते है और उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है।

क्या दो हिस्सों में रिलीज होगी 'वाराणसी'? राजामौली ने अटकलों पर लगाया विराम

एसएस राजामौली इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'वाराणसी' की शूटिंग में बिजी हैं। यह प्राचीन पौराणिक कथाओं पर आधारित है और रामायण से जुड़ी है। जिस दिन से इसका एलान हुआ है, तभी से कयास लगाए जा रहे हैं कि यह फिल्म दो हिस्सों में बनेगी। अब राजामौली ने बताया है कि इस फिल्म का पार्ट 2 आएगा या नहीं।

राजामौली ने फिल्म 'बाहुबली' को दो हिस्सों में बनाया था, इसलिए 'वाराणसी' को लेकर भी अटकलें लगाई जा रही थीं कि यह दो हिस्सों में बनेगी। हालांकि एसएस राजामौली ने लंबे समय से चल रहे इस सस्पेंस को आखिरकार खत्म कर दिया है। मीडिया से राजामौली की बातचीत सामने आई है। इसमें उन्होंने इस मामले पर अपनी बात रखी है।

क्या दो हिस्सों में बनेगी 'वाराणसी'?

नवंबर 2025 में हैदराबाद में 'वाराणसी' की झलक लॉन्च के दौरान न्यूज एजेंसी स्क्रीन रेंट से बात करते हुए राजामौली ने साफ किया कि 'वाराणसी' एक सिंगल-पार्ट फिल्म होगी। इसका रनटाइम लगभग तीन घंटे होगा। उन्होंने बताया कि टीम ने शुरू में इसे दो हिस्सों में बनाने का विचार किया था, लेकिन प्रोडक्शन शुरू होने के कुछ ही समय बाद यह प्लान बदल गया। उन्होंने बताया कि उन्हें भरोसा है कि अगर दर्शक कहानी में खो जाते हैं और उसमें दिलचस्पी लेते हैं, तो रन टाइम ज्यादा लंबा नहीं लगेगा।

'वाराणसी' की स्टारकास्ट

फिल्म 'वाराणसी' साल 2027 में रिलीज होने वाली है। इसमें प्रियंका चोपड़ा के साथ महेश बाबू और पृथ्वीराज सुकुमारन अहम किरदारों में होंगे। रिलीज से काफी पहले फिल्म दुनिया भर में चर्चा बटोर रही है। नवंबर 2025 में 'वाराणसी' की एक झलक दिखाई गई थी। इसे दर्शकों ने काफी पसंद किया था।

अपने आप से लड़कर मैंने खुद को पाया है, मेधा राणा ने जिंदगी में आए बदलाव को किया साझा

फिल्मी दुनिया में कई कलाकार ऐसे होते हैं, जो कैमरे के सामने तो मजबूत दिखाई देते हैं, लेकिन उनके भीतर एक लड़ाई चल रही होती है। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'बॉर्डर 2' के जरिए चर्चा में आई अभिनेत्री मेधा राणा भी उन्हीं कलाकारों में से एक हैं, जिन्होंने अपने अंदर चल रहे सवालों, असमंजस और आत्मसंदेह की जंग को जीतकर अपने ऊपर भरोसा करना सीखा और इस मुकाम तक का सफर तय किया। उन्होंने खास बातचीत के दौरान अपने जीवन में आए बदलावों पर बात की। आईएएनएस से बात करते हुए मेधा राणा ने कहा, ''साल 2022 से लेकर अब तक उनके भीतर सबसे बड़ा बदलाव आत्मस्वीकृति और आत्मविश्वास का रहा है। शुरुआत में मैं खुद को लेकर बहुत उलझन में रहती थी। मुझे अक्सर लगता था कि शायद मैं इस इंडस्ट्री के लिए बनी ही नहीं हूं। ऐसे विचार मुझे भीतर से कमजोर बनाते थे और आगे बढ़ने में बाधा भी बनते थे।''

उन्होंने कहा, ''जब मैंने मनोरंजन जगत में काम करना शुरू किया, तो शुरुआती दिन बेहद कठिन थे। मैं लगातार खुद पर शक करती थी और अपने फैसलों को लेकर आश्वस्त नहीं थी। इस असमंजस से बाहर निकलने में मुझे काफी समय लगा। इंडस्ट्री को समझना, अपने आप को पहचानना और हालात को स्वीकार करना एक लंबी सीख की प्रक्रिया रही।''

जब उनसे पूछा कि 2022 से अब तक उनके जीवन में सबसे बड़ा निजी बदलाव क्या रहा है, तो मेधा ने कहा, ''मैंने अपने आप से लड़कर खुद को पाया है। अब मैं खुद को पहले से ज्यादा स्वीकार करने लगी हूं। मैं अपनी कमियों और खूबियों दोनों को समझती हूं और उन्हें लेकर सहज हूं। यही स्वीकार्यता मेरे आत्मविश्वास की सबसे बड़ी वजह बनी है।'' मेधा राणा ने कहा, ''फिल्म 'बॉर्डर 2' मेरे करियर का एक अहम मोड़ साबित हुई है। इस फिल्म का हिस्सा बनने के बाद और दर्शकों से मिली प्रतिक्रिया ने मेरे भीतर एक नया भरोसा पैदा किया। जब किसी कलाकार को उसके काम के लिए सराहना मिलती है, तो वह खुद पर यकीन करने लगता है। 'बॉर्डर 2' के अनुभव ने मुझे यह एहसास दिलाया कि मैं अपने हुनर में सक्षम हूं और मेहनत रंग ला सकती है।''

उन्होंने कहा, ''अब मैं खुद को लेकर ज्यादा आश्वस्त महसूस करती हूं। अपने अभिनय कौशल और फैसलों पर मेरा भरोसा बढ़ा है। यह आत्मविश्वास मेरे जीवन की अब तक की सबसे बड़ी ग्रोथ है, जो मुझे आगे और बेहतर काम करने की प्रेरणा देता है।''

रणबीर कपूर और यश स्टारर 'रामायण' में विजय सेतुपति हुए शामिल

फिल्म 'रामायण' को नितेश तिवारी निर्देशित कर रहे हैं। इसका पहला पार्ट इस साल दिवाली पर रिलीज होगा, वहीं दूसरा पार्ट अगले साल की दिवाली पर रिलीज किया जाएगा। हाल ही में फिल्म को लेकर नया अपडेट सामने आया है। फिल्म में रणबीर कपूर जहां राम भगवान का किरदार निभा रहे हैं। वहीं साउथ एक्टर यश, रावण के किरदार में नजर आएंगे। हाल ही में एक यह खबर सामने आई है कि फिल्में विजय सेतुपति भी होंगे।

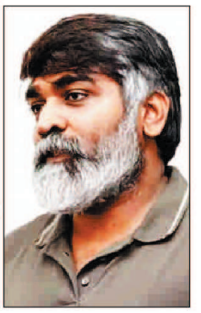

इस किरदार में नजर आएंगे विजय सेतुपति?

मूवीज सिंगापुर की रिपोर्ट के अनुसार फिल्म 'रामायण' में विजय सेतुपति रावण के रोल भाई का रोल करेंगे वह विभीषण के रोल में दिखाई देंगे। फिल्म में यह किरदार अच्छाई का प्रतीक है। विभीषण, अपने भाई रावण के बजाय भगवान राम का साथ देते हैं। फिल्म में विजय सेतुपति यह किरदार निभाएंगे, इसे लेकर मेकर्स ने अभी तक कोई ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं की है।

फिल्म के बाद सिंगिंग में डेब्यू, राशा थडानी ने फिल्म 'लईकी लईका' में गाया गाना

राशा थडानी ने अपनी आने वाली फिल्म 'लईकी लईका' के गाने 'छाप तिलक' से सिंगिंग में भी डेब्यू किया है। इस फिल्म में उनके साथ अभय वर्मा भी हैं। राशा ने हाल ही में सिंगिंग करने से जुड़ा अपना एक्सपीरियंस एक इंटरव्यू में साझा किया है। उन्हें इसे सपने के सच होने जैसा बताया।

एक इंटरव्यू में राशा थडानी बताती हैं कि उन्होंने बचपन से ही म्यूजिक में ट्रेनिंग ली है। वह कहती हैं, 'मैं जब 5 साल की थी, जब मैंने उस्ताद कादिर मुस्तफा खान से हिंदुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीखना शुरू किया। इसके अलावा मैंने जैज म्यूजिक भी सीखा है। म्यूजिक मेरे लिए एक तरह का सुकून है। जब मैं रियाज करती हूं, तो वो एक घंटा सिर्फ मेरा होता है। मैं हमेशा से गाना चाहती थी, यही मेरा पैशन रहा है। लेकिन मैं पूरी तरह एक शॉवर सिंगर हूं। आज मुझे म्यूजिक इंडस्ट्री में कदम रखने का मौका मिला है, इसके लिए मैं बहुत शुक्रगुजार हूं।'

डेब्यू गाना भगवान शिव को समर्पित किया

राशा थडानी ने फिल्म 'लईकी लईका' में जो गाना गया है, उसके बारे में जानकारी साझा की है। इस गाने को भगवान शिव को समर्पित किया है। वह कहती हैं, 'मैंने 12 ज्योतिर्लिंगों की यात्रा की है। मेरे लिए भगवान शिव सिर्फ एक भगवान नहीं, जिंदगी का हिस्सा हैं। वो हर दिन मेरे साथ रहते हैं। इस गाने में जब डमरू की बात होती है, तो मुझे नटराज का नृत्य याद आता है। भगवान शिव कला और नृत्य के देवता हैं। यह गाना उन्हीं को समर्पित है। मेरी कला उन्हीं की है।'

खाकी पहनकर 'कर्तव्य' निभाने निकले सैफ! 'गांधारी' बनीं तापसी 'टोस्टर' में उलझे राजकुमार

नेटफ्लिक्स साल 2026 में भारतीय दर्शकों मनोरंजन के लिए क्या खास पेश करने वाला है? आज मंगलवार को एक इवेंट में इसका एलान कर दिया गया है। इस बार नेटफ्लिक्स के पिटारे में काफी कुछ खास है। इसने आज करीब 21 फिल्मों और सीरीज से पर्दा उठाया है। कुछ फिल्मों के टीजर जारी किए हैं, कुछ के ट्रेलर तो कुछ का एलान अनाउंसमेंट वीडियो के साथ किया गया है। इसके अलावा कुछ ऐसे प्रोजेक्ट हैं, जिनके फर्स्ट लुक पोस्टर रिलीज हुए हैं।

'कर्तव्य' में खाकी पहने दिखे सैफ अली खान

नेटफ्लिक्स ने आज सैफ अली खान अभिनीत दो फिल्मों का एलान किया है। पहली फिल्म है 'हम हिंदुस्तानी'। इसका टीजर रिलीज हुआ है। सच्ची कहानी से प्रेरित इस फिल्म में भारत के पहले चुनाव की कहानी दिखाई जाएगी। वहीं, एक अन्य फिल्म है, 'कर्तव्य'। इस फिल्म में सैफ अली खान खाकी पहनकर कर्तव्य अदा करते दिखाई देंगे। नेटफ्लिक्स पर जारी पोस्टर में कैप्शन में लिखा है, 'धर्म और कर्म के युद्ध में, क्या कर्तव्य जीत पाएगा?' यह नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। इसमें रसिका दुग्गल और संजय मिश्रा भी नजर आएंगे। सैफ अली खान की इस फिल्म के साथ एक जर्नलिस्ट अपनी एक्टिंग की पारी शुरू करने जा रहे हैं।

'गांधारी' के पोस्टर में तापसी की झलक

तापसी पन्नू की आगामी फिल्म 'गांधारी' भी नेटफ्लिक्स पर इस साल रिलीज होगी। इसका आधिकारिक एलान कर दिया गया है और साथ ही पोस्टर जारी किए गए हैं। इनमें तापसी पन्नू का खौफनाक अंदाज देखने को मिल रहा है। 'गांधारी' के पोस्टर के साथ कैप्शन लिखा है, 'आपने एक मां का प्यार देखा है। अब उसके गुस्से से मिलिए'। इस फिल्म में इश्वाक सिंह भी नजर आएंगे।

'टोस्टर' का पोस्टर जारी

राजकुमार राव और सान्या मल्होत्रा की फिल्म 'टोस्टर' का पोस्टर भी रिलीज किया गया है। यह नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। इस कॉमेडी ड्रामा फिल्म में अभिनेता कंजूस व्यक्ति का किरदार निभा रहे हैं। इस फिल्म में राजकुमार और सान्या के अलावा फराह खान, अर्चना पूरन सिंह और अभिषेक बनर्जी भी नजर आने वाले हैं। सभी की झलक दिखाई दी है।

अहान के कारण बंद हुई 'सनकी'? सुनील शेट्टी ने बेटे पर लगे आरोपों को बताया गलत

अहान शेट्टी इन दिनों अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'बॉर्डर 2' को लेकर चर्चाओं में बने हुए हैं। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन कर रही है। इस बीच अब अहान शेट्टी की फिल्म 'सनकी' के बंद होने की चर्चाएं एक बार फिर से उठी हैं। दरअसल, इस फिल्म के बंद होने की वजह अहान शेट्टी के सपोर्टिंग स्टाफ पर आने वाले अधिक खर्च को बताया गया था। कई रिपोर्ट्स में ऐसा कहा गया था कि अहान शेट्टी के सहयोगी स्टाफ पर अधिक खर्च आने के कारण मेकर्स ने 'सनकी' फिल्म को ठंडे बस्ते में डाल दिया। अब इन चर्चाओं पर अहान के पिता व अभिनेता सुनील शेट्टी ने प्रतिक्रिया दी है।

प्रोड्यूसर ने फैलाई अफवाहें

2021 में अहान की डेब्यू फिल्म 'तड़प' के रिलीज होने के बाद उनकी अगली फिल्म 'सनकी' को अचानक रोक दिया गया। बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट में दावा किया गया था कि यह फैसला अहान के साथ आए लोगों के कारण कथित तौर पर हुए खर्चों से बढ़ी चिंताओं के बाद लिया गया है। अब लहरें रेट्रो के साथ बातचीत में अभिनेता सुनील शेट्टी ने इन आरोपों पर प्रतिक्रिया दी है। साथ ही उन्होंने बेटे अहान के प्रोफेशनलिज्म को लेकर भी बात की। सुनील शेट्टी ने कहा कि अहान ने कभी भी अपने साथ आए लोगों को हद से ज्यादा नहीं रखा। ये सब अफवाहें हैं। ये अफवाहें निर्माता की सुविधा के लिए फैलाई गई हैं। अगर निर्माता कहता है कि वह बिल दिखा सकता है, तो मैं देखूंगा। ऐसे में पिता को दखल देना पड़ता है और मैं साफ तौर पर दखल दूंगा। अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए झूठ मत फैलाओ, क्योंकि यह अहान के साथ नाइंसाफी है।

अहान खुद उठाते हैं अपने स्टाफ का खर्च

सुनील शेट्टी ने आगे कहा कि अहान अपने साथ आने वाले लोगों को लेकर बहुत सतर्क रहते हैं। अगर वे उनके साथ आते हैं, तो उनका खर्च वही उठाते हैं। उन्हें इस बात का पूरा एहसास है। जब सुनील शेट्टी घर से खाना-पानी लाते हैं, तो मेरे स्टाफ को कहा गया है कि अगर आप यूनिट का खाना खा रहे हैं, तो ठीक है, लेकिन अगर आप बाहर से खाना मंगवाना चाहते हैं, तो बिल मेरे नाम से बनवाएं, निर्माता के नाम से नहीं। मेरा स्टाफ ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकता, इसलिए अहान का स्टाफ तो ऐसा बिल्कुल नहीं करेगा। अहान तो अभी-अभी इंडस्ट्री में आए हैं। यह उनका इंडस्ट्री में जमने का समय है, इसलिए कोई नखरे नहीं चलेंगे। ऐसा हो ही नहीं सकता।

कई रिपोर्ट्स में इन कारणों का भी किया गया जिक्र

कई मीडिया रिपोर्ट्स में बताया गया कि साजिद नाडियाडवाला ने शुरू में 'सनकी' को आगे बढ़ाया था और प्राइम वीडियो के साथ एक बड़ा डिजिटल सौदा भी किया था। हालांकि, इस सबके बावजूद सैटेलाइट और डिजिटल राइट्स से कम कमाई के कारण प्रोजेक्ट को रोक दिया गया। इसके साथ ही कथित तौर पर अहान के सपोर्ट स्टाफ का अत्यधिक खर्च भी इसका कारण बना। लेकिन अब सुनील शेट्टी ने अहान के सपोर्ट स्टाफ के खर्च की बात को झूठा करार दिया है।

अहान शेट्टी ने साल 2021 में आई एक्शन-रोमांटिक फिल्म 'तड़प' से बॉलीवुड में अपनी शुरुआत की थी। हालांकि, इसके बाद लगभग चार साल से अधिक समय तक वो बड़े पर्दे से दूर रहे। अब इस साल की शुरुआत में रिलीज हुई 'बॉर्डर 2' अहान की दूसरी फिल्म है। फिल्म में उन्होंने नेवी ऑफिसर की भूमिका निभाई है। फिल्म को दर्शकों और क्रिटिक्स की अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। वहीं अहान के काम को भी पसंद किया गया है।

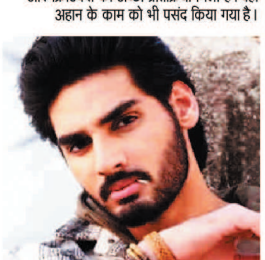

अन्न दान से लेकर विद्या दान, हिंदू धर्म में बताए गए हैं दान के 4 प्रकार

हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति में दान को केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि मोक्ष प्राप्ति और मानवता की सेवा का सबसे बड़ा मार्ग माना गया है। शास्त्रों के अनुसार, दान से न केवल पुण्य फल मिलता है, बल्कि यह जीवन के कष्टों और ग्रह दोषों से भी मुक्ति दिलाता है। मुख्य रूप से दान के चार सर्वश्रेष्ठ प्रकार बताए गए हैं।

आहार दान (अन्न दान)

भूखे को भोजन कराना सबसे बड़ी सेवा है। अन्न दान को एक पुण्यकारी सेवा माना गया है क्योंकि यह तात्कालिक रूप से व्यक्ति को तृप्ति प्रदान करता है। इसे जीवन दान के समान माना गया है।

औषधि दान (स्वास्थ्य दान)

बीमार व्यक्ति को दवाइयां उपलब्ध कराना या उसकी चिकित्सा में मदद करना औषधि दान कहलाता है। शास्त्रों के अनुसार, औषधि दान अन्न दान से भी बेस्ट है क्योंकि यह व्यक्ति को कष्टों और रोगों से मुक्ति दिलाकर उसे राहत प्रदान करता है।

ज्ञान दान (विद्या दान)

शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करना सबसे उत्तम दान है। किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई का खर्च उठाना या ज्ञानवर्धक पुस्तकों को बांटना व्यक्ति का भविष्य संवारता है। यह दान न केवल दानकर्ता को यश दिलाता है, बल्कि मोक्ष प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

अभय दान (सुरक्षा दान)

किसी डरे हुए व्यक्ति या जीव को भयमुक्त करना और उसकी रक्षा करना अभय दान है। जैन धर्म में इसे दानों का राजा कहा गया है। किसी के प्राण बचाना या ऐसा आचरण करना कि आपकी वजह से कोई भयभीत न हो, महानतम दान की श्रेणी में आता है।

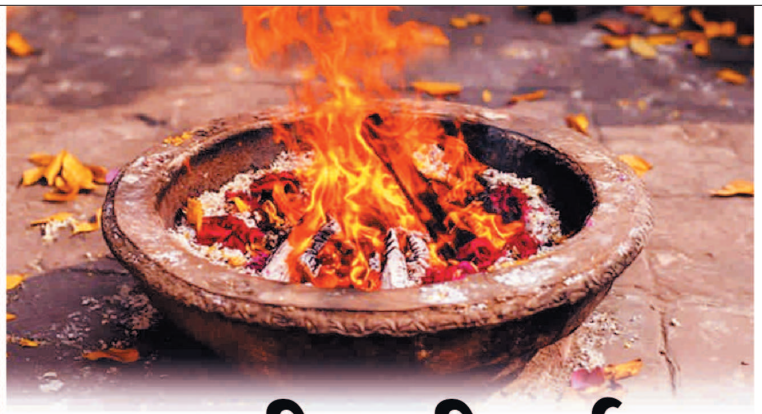

हवन की बची हुई राख का क्या करें?

इन उपायों से बदल सकती है किस्मत

हिंदू धर्म में पूजा से जुड़ी किसी भी सामग्री का विशेष महत्व होता है और उन सभी सामग्रियों को बहुत पवित्र माना जाता है। यही नहीं पूजा के बाद बची हुई सामग्रियों को भी विशेष स्थान दिया जाता है। ऐसे ही घर में जब भी हवन होता है तब हम उसकी बची हुई राख का इस्तेमाल सही तरीके से नहीं कर पाते हैं।

हवन को अत्यंत पवित्र और शुभ कर्म माना गया है। हवन के दौरान अग्नि में डाली गई समिधा, जड़ी-बूटियां और घी वातावरण को शुद्ध करते हैं और आस-पास के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। अक्सर हमारे मन में यह सवाल जरूर आता है कि हवन की राख का क्या करना चाहिए? क्या आप इसे नदी में प्रवाहित कर सकती हैं या इससे कुछ अन्य उपाय किए जा सकते हैं? ऐसा कहा जाता है कि यदि आप हवन की बची हुई राख से ज्योतिष के कुछ उपाय आजमाती हैं तो आपके जीवन में खुशहाली बनी रहती है। आइए ज्योतिर्विद पंडित रमेश भोजराज द्विवेदी से जानें हवन की बची हुई राख का क्या करना चाहिए और इससे आप कौन से ज्योतिष उपाय कर सकती हैं।

अत्यंत पवित्र मानी जाती है हवन की राख

ज्योतिष में हवन की राख को बहुत पवित्र माना जाता है क्योंकि यह अग्नि देव के साक्षात संपर्क में आती है। इसमें कई पवित्र लकड़ियों का इस्तेमाल होता है और इन्हें प्रज्वलित करने से नकारात्मक ऊर्जा को दूर होती है। यही नहीं हवन में सकारात्मक शक्तियों को आकर्षित करने और नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने की क्षमता होती है। इसी वजह से आपको कभी भी हवन की राख को बिना सोचे-समझे हुए कहीं भी फेंकना नहीं चाहिए। इसको आपको हमेशा सही स्थान पर ही रखना चाहिए।

मुख्य द्वार पर लटकाएं हवन की राख की पोटली

घर में सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने के लिए आपको हवन के समापन के बाद इसकी राख को घर के मुख्य द्वार पर जरूर छिड़कना चाहिए, जिससे घर की कोई भी नकारात्मक ऊर्जा दूर हो सकती है। अगर आप मुख्य द्वार पर हवन की राख छिड़कती हैं तो मुख्य द्वार से किसी भी नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश नहीं हो सकता है। इस उपाय से आपके घर में सदैव खुशहाली बनी रहती है और किसी भी बुरी शक्ति का नाश होता है। आप इस राख को किसी पीले कपड़े में बांधकर मुख्य द्वार पर लटका सकती हैं, इससे कोई भी नकारात्मक ऊर्जा घर के भीतर प्रवेश नहीं करेगी।

हवन की तिजोरी या अलमारी में रखें

अगर आपके घर में लंबे समय से आर्थिक समस्याएं चली आ रही हैं, तो आपको घर में हवन करने के बाद इसकी बची हुई राख को घर में तिजोरी वाले स्थान पर रख देना चाहिए। आप इस राख को किसी लाल कपड़े में बांधकर घर में पैसों के स्थान पर रखें। इससे आपके जीवन की कोई भी आर्थिक समस्या दूर हो सकती है और घर में माता लक्ष्मी का वास होता है। इस उपाय से आप पैसों की फिजूलखर्ची को भी रोक सकती हैं।

घर के गार्डन में डालें हवन की राख

हवन की राख को आप घर के गार्डन में इस्तेमाल कर सकती हैं। अगर आप ये राख किसी ऐसे स्थान पर डालें जहां किसी का पैर नहीं पड़ता है तो ज्यादा शुभ माना जाता है। आप इसे घर के बाहर पीपल या नीम के पेड़ के पास रखती हैं तो इसके शुभ फल मिलते हैं।

घर के कोनों में करें छिड़काव

यदि आपके घर में बिना वजह तनाव, कलह-कलेश बने रहते हैं तो आप घर में हवन करने के बाद इसकी राख को घर के चारों तरफ छिड़कें। इस उपाय से कोई भी नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और बिना वजह कलेश दूर होते हैं। आप एक चुटकी राख को पानी में मिलाएं और इसका छिड़काव घर के चारों तरफ करें। इससे आपके जीवन में शांति बनी रहती है और पारिवारिक रिश्ते मजबूत होते हैं। शास्त्रों के अनुसार, हवन की राख को श्रद्धा के साथ माथे या गले पर लगाने से सभी रोगों में राहत मिल सकती है। इसलिए आपको कभी भी हवन की राख को कूड़े में नहीं फेंकना चाहिए बल्कि इसे श्रद्धा पूर्वक किसी पवित्र स्थान पर प्रवाहित करना चाहिए।

जीवन में बढ़ रही हैं परेशानियां?

इस स्तोत्र के नियमित पाठ से मिलेगी हर कष्ट से मुक्ति, सही नियम और समय

हिंदू धर्म में भगवान शिव को आशुतोष माना गया है यानी वे जो मात्र एक लोटा जल और सच्ची भक्ति से शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। महादेव को प्रसन्न करने के लिए वैसे तो कई मंत्र और चालीसा प्रचलित हैं, लेकिन शास्त्रों में परमेश्वर स्तुति स्तोत्र को विशेष स्थान दिया गया है। मान्यता है कि यह स्तोत्र न केवल जीवन की बाधाओं को दूर करता है।

हिंदू धर्म में भगवान शिव को आशुतोष माना गया है यानी वे जो मात्र एक लोटा जल और सच्ची भक्ति से शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। महादेव को प्रसन्न करने के लिए वैसे तो कई मंत्र और चालीसा प्रचलित हैं, लेकिन शास्त्रों में परमेश्वर स्तुति स्तोत्र को विशेष स्थान दिया गया है। मान्यता है कि यह स्तोत्र न केवल जीवन की बाधाओं को दूर करता है, बल्कि साधक को आध्यात्मिक शांति और सकारात्मकता से भर देता है।

क्या है इस स्तोत्र का आधार

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, परमेश्वर स्तुति स्तोत्र महादेव के उस कल्याणकारी और विराट स्वरूप को समर्पित है, जो सृष्टि का आधार है। आध्यात्मिक जानकारों का मानना है कि जब व्यक्ति खुद को संकटों से घिरा हुआ पाता है, तब इस स्तोत्र का पाठ एक अमोघ शक्ति की तरह काम करता है। यह भक्त के अंतर्मन की शुद्धि कर आत्मविश्वास को जागृत करने में सहायक होता है।

नियमित पाठ से मिलने वाले चमत्कारी लाभ

ज्योतिष और धार्मिक विशेषज्ञों के अनुसार, इस स्तुति के नियमित जाप से कई दिव्य लाभ प्राप्त होते हैं-

मानसिक तनाव से मुक्ति - इस स्तोत्र की विशिष्ट ध्वनियां और शब्द विन्यास मस्तिष्क को शांत करने और एकाग्रता बढ़ाने में प्रभावी माने जाते हैं।

नकारात्मकता का नाश - घर और कार्यस्थल पर मौजूद नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करने के लिए इसे अत्यंत प्रभावशाली माना गया है।

पाप शमन और मोक्ष - पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, श्रद्धापूर्वक किया गया यह पाठ अनजाने में हुए पापों के प्रभाव को कम करता है और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सुगम बनाता है।

कार्य सिद्धि - जीवन में आ रही अनचाही बाधाएं और रुकावटें महादेव की कृपा से दूर होने लगती हैं।

पाठ की सही विधि और नियम

किसी भी स्तोत्र का पूर्ण फल तभी मिलता है जब उसे विधि-विधान से किया जाए। परमेश्वर स्तुति स्तोत्र के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

समय और स्वच्छता - ब्रह्म मुहूर्त या सुबह स्नान के बाद स्वच्छ सफेद या केसरिया वस्त्र पहनकर पाठ करना सबसे उत्तम है।

पूजन सामग्री - भगवान शिव की प्रतिमा या शिवलिंग के समक्ष घी का दीपक प्रज्वलित करें।

विशेष दिन - वैसे तो इसका पाठ प्रतिदिन फलदायी है, लेकिन सोमवार, प्रदोष व्रत या शिवरात्रि के दिन इसका महत्व कई गुना बढ़ जाता है।

पूर्णता - पाठ संपन्न होने के बाद महादेव को बेलपत्र और जल अर्पित करें, यह पूजा की पूर्णता का प्रतीक माना जाता है।

भारत के इन 5 मंदिरों का प्रसाद भूलकर भी घर न लाएं, हो सकते हैं बड़े नुकसान

भारत को मंदिरों और देवताओं की भूमि के रूप में सदियों से सराहा जाता रहा है। यहां के हर स्थान पर कोई न कोई प्रसिद्ध मंदिर जरूर है। हर स्थान पर कोई ना कोई ऐसा मंदिर भी होता है जिसकी अपनी लगा कहानी होती है। यही नहीं उन मंदिरों की रहस्यमई कथाओं के साथ उनसे जुड़े कुछ तथ्य भी जरूर होते हैं जो हमें सोचने पर मजबूर कर देते हैं। ऐसे ही देश के कुछ ऐसे मंदिर भी हैं जिनकी कहानी के साथ उससे जुड़ी कुछ बातें भी हैं जो हैरान कर सकती हैं। उन्हीं में से कुछ मंदिर ऐसे भी हैं जिनके लिए यह प्रचलित है कि यदि आप वहां दर्शन के लिए जा रही हैं तो भूलकर भी आपको उन स्थानों का प्रसाद अपने घर में नहीं लाना चाहिए। मान्यता यह भी है कि यदि आप इन मंदिरों का प्रसाद घर लेकर आती हैं तो इससे आपके घर में भी घटनाएं हो सकती हैं और कुछ नकारात्मक प्रभाव आ सकते हैं। आइए जानें भारत के उन अनोखे मंदिरों के बारे में जिनसे आप शायद अनजान होंगी।

मेहंदीपुर बालाजी

हनुमानजी को समर्पित मेहंदीपुर बालाजी का नाम भला किसने नहीं सुना होगा। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर में दर्शन मात्र से प्रेत बाधाएं समाप्त होती हैं और जो लोग बुरी शक्तियों से पीड़ित होते हैं, उनको इस मंदिर में दर्शन करने से बाधाओं से मुक्ति मिलती है। मान्यता है कि इस मंदिर में यदि कोई व्यक्ति बूंदी के लड्डू का भोग लगाता है तो उसकी बाधाएं दूर होती हैं। इसी स्थान पर भैरव बाबा को भी उड़द दाल और चावल का भोग लगाया जाता है। मान्यता है कि इस मंदिर में यदि कोई आपको प्रसाद दे तो उसे ग्रहण न करें और न ही मंदिर का प्रसाद घर लाएं, अन्यथा जीवन में समस्याएं आ सकती हैं।

काल भैरव मंदिर

काल भैरव मंदिर मध्य प्रदेश के उज्जैन में स्थित है। इस मंदिर में प्रसाद के रूप में भक्त मदिरा का भोग लगाते हैं। यह भारत का इकलौता ऐसा मंदिर है जहां यह परंपरा प्रचलित है कि यहां जो मदिरा भोग में चढ़ती है उसका भोग ग्रहण नहीं करना चाहिए और न ही इसे घर लाना चाहिए। यदि आप भूलकर भी इस प्रसाद को घर लाती हैं तो आपके घर में कुछ अनहोनी घटनाएं हो सकती हैं।

कामख्या देवी मंदिर

कामख्या देवी मंदिर असम के गुवाहाटी में स्थित भारत के प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह भारत का एक मात्र मंदिर है जहां माता कामाख्या की योनि की पूजा उनके मासिक धर्म के दौरान की जाती है। यहां साल में एक बार 3 दिवसीय उत्सव मनाया जाता है और इस दौरान मंदिर के भीतर किसी का भी प्रवेश वर्जित होता है यही नहीं यदि कोई इस मंदिर का प्रसाद ग्रहण करता है तो उसके जीवन में कुछ अशुभ घटनाएं हो सकती हैं।

नैना देवी मंदिर

नैना देवी मंदिर हिमाचल में मौजूद है और यह 51 शक्तिपीठों में से एक है. यहां प्रसाद के रूप में दी जाने वाली चीजें विशेष अनुष्ठान के बाद केवल माता को अर्पित की जाती हैं। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर में मिलने वाले प्रसाद को आपको मंदिर परिसर में ही ग्रहण कर लेना चाहिए। आपको भूलकर भी इस मंदिर का प्रसाद मंदिर से बाहर या घर में नहीं लाना चाहिए। ऐसा करने से आपके जीवन में नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। हालांकि यदि आप इस प्रसाद को मंदिर परिसर में ही ग्रहण कर लेती हैं तो इसके कोई अशुभ प्रभाव नहीं होते हैं।

कोटिलिंगेश्वर मंदिर

कोटिलिंगेश्वर मंदिर कर्नाटक के कोलार जिले में स्थित है और इस मंदिर में एक करोड़ शिवलिंगों की स्थापना की गई है। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर का प्रसाद भक्तों को केवल प्रतीकात्मक रूप से ही ग्रहण करना चाहिए। मान्यता यह भी है कि आपको कभी भी शिवलिंग पर चढ़ा हुआ प्रसाद ग्रहण नहीं करना चाहिए। इसी वजह से इस मंदिर में प्रसाद न तो ग्रहण करना चाहिए और न ही इसे मंदिर से बाहर लाना चाहिए।

वैशाली नगर विधानसभा बना जनसेवा का मॉडल

ऐसा विधानसभा क्षेत्र...

ऐसा विधायक... जहां योजनाएं सीधे जनता तक!

- वेंटीलेटर युक्त एम्बुलेंस सेवा
- ₹1 में डायलिसिस सुविधा
- ₹1 में सोनोग्राफी सुविधा
- ₹1 में X-Ray सुविधा
- 31 प्रकार के ब्लड टेस्ट निःशुल्क
- प्रतिदिन मुफ्त भोजन सेवा
- मुफ्त मिनरल वाटर वितरण
- विधायक कार्यालय में फ्री कंबल बैंक
- ₹1 में पावर वाला चश्मा
- ₹1 में हेलमेट किराए पर उपलब्ध
- विधायक की "शक्ति योजना"
- अंतिम यात्रा वाहन (स्वर्ग रथ)

वैशाली नगर विधानसभा क्षेत्र में जनहित की अनोखी पहलें लगातार आम लोगों को राहत और सुविधाएं दे रही हैं। यहां कई ऐसी योजनाएं संचालित हैं, जो बेहद कम लागत या पूरी तरह मुफ्त में आमजन तक पहुंच रही हैं

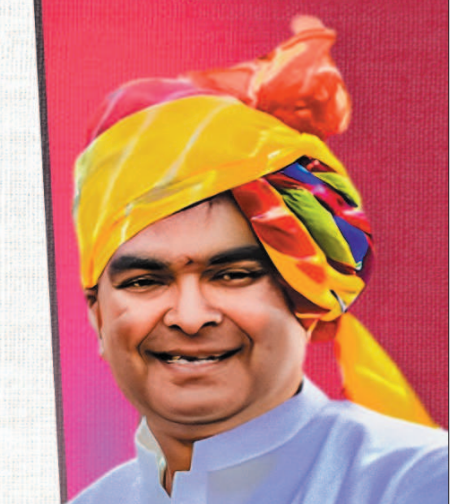

रिकेश सेन
विधायक वैशाली नगर विधानसभा

पीआरजीआई सं.-CTHIN/25/A3746 यह हिंदी सांध्य दैनिक समाचार पत्र नई दृष्टिबिंद स्वामी एवं प्रकाशक आलोक तिवारी द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 से मुद्रित करवा कर। 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से प्रकाशित संपादक आलोक तिवारी मो. 7415469100 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार), समस्त विवादों का निपटारण न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।